www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 19 जनवरी 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 19 जनवरी 2014 से 25 जनवरी 2014

पौष कृ.–03 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 91, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

श्री पूनम सूरी लगातार तीसरी बार सर्वसम्मति से डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति के प्रधान निर्वाचित हुए

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति की 5 जनवरी, 2014 को आयोजित विशेष बैठक में श्री पूनम सूरी जी को तीसरी बार निर्विरोध रूप से सर्वसम्मति द्वारा वर्ष 2014 के लिए प्रधान चुन लिया गया। विचारणीय विषयों में समिति के चुनाव का विषय आते हुए सदस्यों से खचाखच भरे सभागार में विशेष उत्साह देखने को मिला। पदाधिकारियों के चुनाव के लिए बिग्रेडियर ए.के. अदलखा और डॉ. निशा पेशिन को सर्वसम्मति से निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया और निवर्तमान पदाधिकारियों के द्वारा अपने स्थान रिक्त कर दिये गये।

प्रधान पद के लिए नाम आमंत्रित किये जाने पर अत्यंत तत्परता दिखाते हुए श्री अजय सहगल ने श्री पूनम सूरी जी का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तावित किया जिसका अनुमोदन श्री सत्यपाल जी के साथ सारे सदस्यों ने हाथ ऊपर उठाकर किया। किसी दूसरे नाम का प्रस्ताव न आने पर श्री सूरी को सर्वसम्मति से प्रबंधकर्त्री समिति का प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इसके साथ ही उप–प्रधान पद के लिए डॉ. एस.के सामा, महामंत्री पद के लिए श्री आर.एस.शर्मा, सेक्रेटरी पद के लिए श्री रवीन्द्र कुमार, और कोषाध्यक्ष पद के लिए श्री महेश चोपड़ा जी का नाम सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। समिति के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए के लिए अतिरिक्त पदाधिकारी उप प्रधान, मन्त्री तथा मानद कोषाध्यक्ष निर्वाचित किये गये।

सदस्यों द्वारा व्यक्त विश्वास का आभार प्रकट करते हुए मान्य प्रधानजी ने अत्यंत विनम्रता से पद को स्वीकार करते हुए डी.ए.वी. को उन्नति के नवीन शिखरों तक ले जाने का संकल्प दोहराया और कहा कि वे डी.ए.वी. के कार्य को पूर्ण सेवा–भाव से करते रहेंगे जिससे उनका अंत:करण शुद्ध हो सके। सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए प्रधान जी ने आह्वान किया कि समिति के प्रति उनकी निष्ठा और साधना में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आनी चाहिए। समिति के नये सदस्यों और कुछ पुनः वापस लौटे सदस्यों का स्वागत करते हुए मान्य प्रधानजी ने एक प्रश्न उठाया कि वह क्या चीज् है जो हम सब को डी.ए.वी. की ओर खींचती है। इस प्रश्न को अपने ऊपर लागू करते हुए उन्होंने कहा कि मैं तो इसके तीन कारण समझता हूँ। पहला, 'डी.ए.वी'. इस अभिव्यक्ति के प्रथम पद के रूप में दयानन्द का नाम मुझे निरंतर प्रेरित करता है कि मैं उनके अधूरे कामों को पूरा करने का भरसक प्रयत्न करूँ, और दूसरे कारण के रूप में मैं समझता हूँ कि प्रभु ने माँगने पर या बिना माँगे जो कुछ भी मेरी झोली में डाला है, मैं उसके लिए प्रभु का धन्यवाद करूँ, और तीसरा कारण यह है कि डी.ए.वी. संस्था की सेवा करते हुए अपने भीतर की बुराइयों, अशुद्धियों और कमियों को दूर करके अपना अंत:करण शुद्ध करूँ और प्रभु प्रसाद पाने का अधिकारी बनूँ। उन्होंने नये बने सदस्यों और चुने हुए पदाधिकारियों का भी आह्वान किया कि वे इन तीनों बिन्दुओं पर निरंतर चिंतन करते रहें।

अपने अत्यंत मार्मिक संबोधन में चर्चा को आध्यात्मिक मोड़ देते हुए श्री सूरी जी ने कहा कि संस्था के लिए भौतिक, आर्थिक और शैक्षिक उन्नति के आयाम तो निश्चित करने ही हैं, लेकिन वह तो एक शारीरिक एजेण्डा होगा। हम सब मिलकर अपने लिये एक आत्मिक एजेण्डा भी निर्धारित करें। इसके लिए उन्होंने समस्त सभासदों से निवेदन किया कि वर्ष 2014 में विनम्रता को अपने व्यक्तित्व का अविभाज्य अंग बनाएं और इसके लिए 'गायत्री मंत्र' को अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न करें। वेद, उपनिषद् और दूसरे शास्त्रों से उद्धरण देकर मान्य प्रधानजी ने गायत्री की महिमा का गान किया, और गायत्री जप से प्राप्त होने वाली आयु, स्वास्थ्य, संतति, पशुधन, कीर्ति, धन और ब्रह्मवर्चस् के प्राप्त होने की चर्चा की। मान्य प्रधान जी ने ज्ञान, कर्म और उपासना से परिपूर्ण इस महामंत्र को दिन में एक बार कम–से कम पच्चीस मिनट तक अर्थ–सहित जपने का आध्यात्मिक आह्वान किया।

तपस्या, श्रद्धा और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण प्रधानजी के आह्वान से संपूर्ण सभागार गदगद हो उठा।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 19 जनवरी, 2014 से 25 जनवरी, 2014

निर्भय बनूँ

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यदन्ति यच्च दूरके, भयं विन्दति मामिह।
पवमान वि तज्जहि।।

ऋग् ९.६४.२१

ऋषि: **मैत्रावरूणि: वसिष्ठ:**। देवता **पवमान: सोम:**। छन्द: **गायत्री**।

● **(यत्)** जो, **(अन्ति)** समीप, **(यत् च)** और जो, **(दूरके)** दूर, **(इह)** यहाँ, **(मां)** मुझे, **(भय)** भय, **(विन्दति)** प्राप्त करता है, **(पवमान)** हे सर्वत्र-संचारी, पवित्रकर्ता सोम प्रभु!, **(तत्)** उसे, **(वि जहि)** विनष्ट करो।

● मनुष्य प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान् होता हुआ भी सबसे अधिक भयशील है। अन्य सब पशु, पक्षी, सरीसृप, कीट, पतंग आदि जन्तु भयावह जंगलों में भी निर्भय विचरते हैं। पर मानव घर में भी भयभीत रहता है, दंश, मशक, वृश्चिक, सर्प, आधि, व्याधि, चोर, शत्रु, शासक आदि के भय से व्याकुल रहता है। ये भय आत्म-विश्वास और प्रभु-विश्वास की कमी के कारण होते हैं।

मैं भी समीप के और दूर के अनेक प्रकार के भयों से घिरा हुआ हूँ। समीप में मुझे अपने पड़ोसियों से, साथी-संगियों से, यहाँ तक कि घर के सदस्यों से भी भय लगा रहता है कि ये कहीं मेरा कुछ अनिष्ट न कर दें। अपने मन में सन्देह का बीज बोकर मैं सोचता हूँ कि कहीं ये मेरी हत्या न कर दें, मेरा धन न हड़प लें, मेरा रथ न हर लें। नींद में भी मुझे चोरों के सपने आते है। दूर जाता हूँ। दूर जाता हूँ तो वहाँ भी भय पीछा नहीं छोड़ता। सोचता हूँ कहीं रेलगाड़ी न टकरा जाए, कहीं मोटरकार आदि यान दुर्घटना-ग्रस्त न हो जाए, कहीं लुटेरे मुझे लूट न लें, कहीं मेरे दूर यात्रा पर आये होने के कारण मेरी अनुपम स्थिति में परिवार पर कोई संकट न आ जाए। ये सब तो ऐसे भय हैं, जो व्यर्थ ही मेरे शंकाशील मन को उद्विग्न किए रखते हैं; पर इनके अतिरिक्त कई भय सचमुच के भी होते हैं, जिनके भय का कारण वास्तव में उपस्थित होता है। उस समय भी मैं भय-कारणों का प्रतीकार करने के स्थान पर भयग्रस्त हुआ निष्कर्मा खड़ा रहता हूँ। मैं इतना भयशील हूँ कि मुझे सन्ध्या-वन्दन आदि सत्कर्म करते हुए भी भय व्यापे रहता है कि कहीं कोई मेरा उपहास न करे।

इन दूर के तथा समीप के सभी भयों को हे मेरे प्रभु! तुम्हीं दूर कर सकते हो। तुम्हारा सच्चा ध्यान मेरे अन्दर आत्म-संबल उत्पन्न कर सकता है। तुम 'पवमान' हो, सर्वत्र-संचारी, सर्वव्यापी और अन्त:करण को पवित्र करनेवाले हो। तुम सर्वत्र मेरे चित्त की भय-दशा को जानकर और उससे मुझे मुक्त कर पवित्र करते रहो। हे पवित्रता के देव! तुम मेरे भयों को समूल विनष्ट कर दो, जिससे फिर कभी भय मेरे मानस को आक्रान्त न कर सके। समीप और दूर के सब स्थानों को, सब दिशाओं को, मेरे लिए निर्भय कर दो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

पृथिवी, जल, आकाश आदि पदार्थों को रचने वाला ईश्वर विश्वकर्मा है। दिव्य कर्मों को करने वाले देव अर्थात् मनुष्यों की रचना की बात कहकर स्वामी जी ने ईश्वर की आज्ञा सुनाई कि जो मनुष्य उत्तम सकाम कर्म में शरीर को जलाता है वह संसार में उत्तम सुख पाता है।

वेद की बात कहकर अन्य शास्त्रों मनुस्मृति, सुश्रुत, दर्शन, उपनिषद् तथा अन्य शास्त्रों में आए सृष्टि उत्पत्ति विषयक वर्णनों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया। सभी शास्त्र ब्रह्म के सामर्थ्य से त्रिगुणात्मिका प्रकृति में गति से महत् की उत्पत्ति तथा उससे अहंकार की उत्पत्ति मानते हैं। इसके बाद तन्मात्राओं की बात हुई और बताया कि इन तन्मात्राओं से यथाक्रम आकाश, अग्नि, जल और पृथिवी उत्पन्न हुए। पृथिवी को प्राणमय संसार का 1176वाँ अंश कहकर सृष्टि की विशालता बताई। ईश्वर ने अगणित कीटाणुओं की योनियों से निकाल कर हमें मानव शरीर दिया ताकि हम परमतत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

चौबीस अनात्म तत्त्वों का जिक्र करके प्रश्न उठाया कि यह सारा प्रपञ्च किसी प्रयोजन के लिए है अथवा बिना प्रयोजन के। योग दर्शन ने उत्तर दिया

'भोगअपवर्गार्चम्'। प्रकृति का खेल तभी तक है जब तक आत्मा अपने कर्मानुसार अपने भोग तथा मोक्ष को प्राप्त नहीं कर लेता। एक और प्रश्न किया – सृष्टि के चौबीस तत्त्वों में आत्मा का तो संकेत नहीं, फिर यह कार्य कैसे करते है? उत्तर में बताया कि एक आत्मा के निकल जाने से तत्त्वों की इस सेना के विद्यमान होते हुए भी कार्य नहीं हो सकेगा।

पश्चिमी विद्वान् भी आत्मा को मानते हैं। स्वामी जी ने बताया कि हमारे पूर्वजों ने यह तथ्य कैसे जाना। उन्होंने ध्यान और समाधि में मग्न हो सूर्य आदि के अन्दर छिपी हुई परमात्मा की शक्ति को देखा।

– अब आगे

यह संसार क्या है?

अब सब प्रश्नों से बड़ा प्रश्न यह सामने आता है कि चौबीस भौतिक या अनात्म-तत्वों की बात भी समझ ली और इन चौबीस के अतिरिक्त जीवात्मा तथा ईश्वर इन दो आत्म-तत्त्वों का भी कुछ वर्णन सुन लिया, परन्तु जब यह संसार जीव के हितार्थ ही बनाया गया था तो फिर यह सारा प्रपंच दु:ख क्यों दे रहा है? और क्यों हम इस झगड़े में फँस गये हैं? कुछ लोग तो संसार के दु:खों तथा क्लेशों को देखकर यही कहने लगे हैं कि क्यों व्यर्थ जीवन नष्ट करते हो? खाओ, पिओ और मौज उड़ाओ! यह दुनिया हँसने, नाचने, गाने तथा मजे़ उड़ाने के लिए बनी है। एक समय ऐसे ही लोगों का एक देश में राज्य हो गया था जो नाना स्वादु पदार्थ खाते-पीते और फिर औषध लेकर वमन कर देते तथा फिर खाने में जुट जाते थे। भारत में तो एक संप्रदाय ही ऐसा प्रकट हो गया जिसने काम-वासना को पूर्ण करना और मद्य पीते-पीते मर जाना ही मुक्ति का साधन समझ लिया। आधुनिक काल में यह विचार बढ़ता ही चला जा रहा है कि खाना, पीना और तमाशे देखना ही जीवन का लक्ष्य है। दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं जो दु:खों से पीड़ित संसार को देखकर इससे सर्वथा मुख मोड़ बैठे हैं। मिस्टर के. एच. होल्मस तो यह कहता है कि यह सारी दुनिया एक धोखा है, केवल खोखलापन है और कोरी विडम्बना है; जिस प्रकार दूसरी बुराइयों को छोड़ना है, ऐसे ही इस एक बड़ी बुराई का त्याग भी करना होगा। भारत में कितने ही त्यागी और विरक्त महात्मा सांसारिक पदार्थों का सर्वथा त्याग करके वनों में जा बैठे और केवल आत्म-चिन्तन के लिए जीवित हैं।

खाओ, पियो, मौज उड़ाओ के अतिरिक्त

एक तीसरे प्रकार के लोग भी हैं जो न 'खाओ, पियो, मौज उड़ाओ' पर चलते हैं, न ही दुनिया से मुँह मोड़ते हैं, अपितु संसार में रहकर कष्ट-दु:ख भोगते हैं, फिर भी अपने कर्त्तव्य को पूरा करते रहते हैं। इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो जीवन को बिना किसी प्रयोजन तथा बिना उद्देश्य के समझते हैं, जिन्हें भविष्य अन्धकारमय

दिखलाई देता है और जो वर्तमान को भी अन्यन्त दुःखवादियों के समान दुःख–रूप ही देखते हैं। ऐसे निराश–हताश लोग यह समझते हैं कि मनुष्य ऐसे ही जन्म ले लेता है, फिर खान–पान तथा मान के लिए दिन–रात परिश्रम करता है। बालक से युवक, युवा से वृद्ध होकर मर जाता है। एक मरता है, दूसरा जन्म लेता है। वह मृत्यु का ग्रास होते लोगों को देखता है और अपनी मृत्यु को भूलकर उसी चक्र में फँसा रहता है। कुछ अन्न खाकर, पानी पीकर, वस्त्रों का प्रयोग करके, कुछ इन्द्रियों के विषयों की अग्नि में समिधाएँ डालकर चल देता है। कहाँ? यह आज तक कोई भी बतला नहीं सका और यह क्रम पता नहीं कब से चल रहा है और कब तक चलता रहेगा?

संसारी जीवों की वेदना

इस दुनिया में जो फिर ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं, क्या वे इसी पर सन्तुष्ट हो जाते हैं? –नहीं; वे और आगे बढ़ते हैं। वे अपनी कामनाओं को एक देश का समूहिक रूप देते हैं और उसको पूर्ण करने के लिए आसुरी शक्तियों का आह्वान करते हैं। तब युद्धों की तैयारियाँ होने लगती हैं। मनुष्य ही मनुष्य का संहार करने लगता है, रक्त की नदियाँ चलती हैं, मानवता किनारे खड़ी रुदन करती है। कितनी देवियाँ विधवा, कितने बालक अनाथ, कितने मनुष्य बिना हाथ–पाँव के हो जाते हैं। मनुष्य भयङ्कर व्याघ्र बन जाता है। यह क्या जीवन हुआ? यह क्या जीवन–उद्देश्य हुआ?

फिर जो वेदना, पीड़ा, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष की अग्नि संसारी लोगों में भड़क रही है, इसे देखकर तो इस संसार से चित्त और भी ऊब जाता है। संसार की ऐसी अवस्था देखकर ही बौद्ध धर्म–ग्रन्थ 'धम्मपद' की गाथा 145 में यह पुकारा गया है:

को नु हासो किमानन्दो नित्यं पज्जलिते सति।

'जब यह संसार नित्य जलते घर के समान है, तब यहाँ हँसी क्या हो सकती है और आनन्द क्या मनाया जा सकता है?'

भगवान् राम की व्यथा की कथा

इस संसार के भिन्न–भिन्न पदार्थों का अवलोकन करके भगवान् राम जितने दुःखित हुए, इतना और कौन होगा? 'योगवासिष्ठ' में यह मार्मिक वर्णन लगभग 150 पृष्ठों में भगवान् राम की वाणी से कराया गया है। इस व्यथा की कथा लिखने का प्रयोजन यह है कि जब तक संसारी भोग–पदार्थों से वैराग्य नहीं होता, तत्त्वज्ञान को समझने की बुद्धि तब तक प्रकाशित नहीं होती। दर्पण से जब कूड़ा तथा मैल हटे, तभी तो मुखड़ा दिखाई दे सकेगा!

भगवान् राम की वाणी से जो कुछ कहलवाया गया है, उसे पढ़कर हर प्रकार के हृदय पर एक गम्भीर चोट लगती है और यह लगनी ही चाहिए, क्योंकि मानव को सार–वस्तु तभी मिल सकती है जब ऊपर की असार वस्तुओं को परे हटा दिया जाय। अब भगवान् राम की व्यथा की कथा सुनिये:

भगवान् राम अभी छोटी ही आयु के थे। तीर्थ–यात्रा में उन्होंने संसार की जो अवस्था देखी, उससे वे अत्यन्त खिन्न रहने लगे। उन्हें कोई भी वस्तु अच्छी न लगती। न हँसते, न रोते, न गाते; एकान्त में मौन साधे बैठे रहते। शरद् ऋतु की समाप्ति में वृक्ष की जैसी अवस्था होती है, वैसे ही श्री राम प्रतिदिन दुबले–पतले और पीले होते जाते। श्री वाल्मीकि जी लिखते हैं:

किं धनेन किमम्बाभिः किं राज्येन किमीहया?
इति निश्चयवानन्तः प्राणत्यागपरः स्थितः ॥४६॥

योगवासिष्ठ, वैराग्य प्रकरण, सर्ग १०॥

'धन से क्या होगा? माताओं से क्या होगा? इस विस्तृत राज्य से कौन प्रयोजन सिद्ध होगा? किसी झूठी वस्तु की इच्छा से क्या? इस प्रकार का निश्चय करके प्राण–त्याग करने की इच्छा करने लगे।'

इन्हीं दिनों में विश्वामित्र जी महाराज दशरथ के पास पहुँचे कि उनके यज्ञ की रक्षा के लिए श्री राम को उनके साथ भेजा जाय। भगवान् राम तो उदास–हताश थे, फिर भी उन्हें बुलाया गया। गुरु वसिष्ठ जी महाराज भी वहीं विद्यमान थे। श्री राम ने दरबार में पहुँचकर अपनी मानसिक अवस्था बतलाते हुए संसार में एक–एक वस्तु से उपरामता प्रकट की और कहा:

अहं तावदयं जातो निजेऽस्मिन् पितृसद्मनि।
क्रमेण वृद्धिं संप्राप्तः प्राप्तविद्यश्च संस्थितः॥३॥
ततः सदाचारपरो भूत्वाऽहं मुनिनायक!
विहृतस्तीर्थयात्रार्थ– मुर्वीमम्बुधिमेखलाम्॥४॥

योगवा० सर्ग १२॥

'मैं यहाँ अपने पिता के घर में उत्पन्न हुआ, क्रम से बढ़ा और मैंने विद्या भी प्राप्त की। उसके पश्चात् मुनिनायक! सदाचरणों के अनुष्ठान में तत्पर होकर तीर्थ–यात्रा के लिए समुद्र–पर्यन्त पृथिवी के चारों ओर विचरा' ॥३॥४॥

एतावताऽयं कालेन संसारावस्थामिमां हरन्।
समुद्भूतो मनसि मे विचारः सोऽयमीदृशः॥५॥

'इस बीच में इस संसार पर आस्था को हरानेवाला यह विचार मेरे मन में उत्पन्न हुआ, जिसे मैं आपके सामने उपस्थित करता हूँ ॥५॥

अस्थिराः सर्व एवेमे सचराचरचेष्टिताः।
आपदां पतयः पापा भावा विभवभूमयः ॥२॥

'चर और अचरों की चेष्टाओं से युक्त वैभवकाल में रहनेवाले ये जितने भोग के पदार्थ हैं, ये आपत्तियों के ही स्वामी अर्थात् मूल हैं और पाप के हेतु हैं।'

मृगतृष्णा जल की तरह

असतैव वयं कष्टं विकृष्टा मूढबुद्धयः।
मृगतृष्णाम्भसा दूरे वने मुग्धमृगा इव ॥११॥

'जैसे मरीचिका को जल समझकर मुग्ध मृग वन में बड़ी दूर तक इधर–उधर भटकते रहते हैं फिर भी कुछ नहीं मिलता है, हम मूढ़बुद्धि लोग भी वैसे ही इस संसार में असत् पदार्थों को सुख के साधन समझकर इधर–उधर खूब भटकते रहते हैं, पर हाथ कुछ नहीं लगता।'

न केनचिच्च विक्रीता विक्रीता इव संस्थिता।
बत मूढा वयं सर्वे जानाना अपि शाम्बरम् ॥१२॥
किमेतेषु प्रपञ्चेषु भोगा नाम सुदुर्भगाः।
मुधैव हि वयं मोहात् संस्थिताः बद्धभावना॥१३॥

'यद्यपि हम लोग किसी के द्वारा बेचे नहीं गये हैं, तथापि बेचे गये प्राणियों के समान परवश होकर बैठे हुए हैं। अत्यन्त खेद है कि माया को जानते हुए भी मूढ़ ही हैं क्योंकि उसकी चिन्ता नहीं करते' ॥१२॥

'इस संसाररूप प्रपंच में ये जो अभागे लोग हैं वे कौन वस्तु हैं कि हम लोग उनके व्यर्थ मोह में या भ्रान्ति में बद्ध होकर अवस्थित हैं' ॥१३॥

शाम्यतीदं कथं दुःखमिति तप्तोऽस्मि चिन्तया।
जरद् द्रुम इवोग्रेण कोटरस्थेन वह्निना ॥२१॥
संसारदुःखपाषाण – नीरन्ध्रहृदयोऽप्यहम्।
निजलोकभयादेव गलद्बाष्पं न रोदिमि ॥२२॥

'जैसे पुराना वृक्ष अपने खोखले में रहनेवाली उग्र अग्नि से जल जाता है, वैसे ही हे मुनिश्रेष्ठ! मेरा इस दुःख से छुटकारा कैसे होगा? ऐसी चिन्तारूप अग्नि से मैं सदा जलता रहता हूँ ॥२१॥ संसार के दुःखरूप पाषाण से मेरा अन्तःकरण जर्जर हो गया है। मैं अपने मित्रों और लोक से डरकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से नहीं रो रहा हूँ, क्योंकि यदि मैं रोना आरम्भ करूँ तो वे भी रोने लगें' ॥२२॥

अपनी व्यथा का कुछ वर्णन करके अब श्री राम ने लक्ष्मी के सम्बन्ध में कहना आरम्भ किया:

मोहयन्ति मनोवृत्तिं खण्डयन्ति गुणावलिम्।
दुःखजालं प्रयच्छन्ति विप्रलम्भपराः श्रियः ॥२५॥

'वंचना से भरपूर यह लक्ष्मी अन्तःकरण की वृत्तियों को मुग्ध करती है, गुणों को नष्ट करती है और अनेक तरह के दुःखों को देती है।'

चिन्ता दुहितरो बह्व्यो भूरि दुर्ललितैर्विताः।
चंचलाः प्रभवन्त्यस्यास्तरङ्गाः सरितो यथा ॥३॥ सर्ग १३॥

'हे मुनिवर! चिन्ताएँ श्री (लक्ष्मी) की पुत्रियाँ हैं। जैसे नदी से असंख्य तरंगें उत्पन्न होती हैं, फिर वे वायु की सहायता से बढ़ती हैं, वैसे ही श्री से असंख्य चिन्तारूप पुत्रियों की उत्पत्ति होती है, तदुपरान्त विविध दुश्चेष्टाओं द्वारा उनकी वृद्धि होती है।'

धन–सम्पत्ति की वृद्धि से दुःखी

प्राज्ञाः शूराः कृतज्ञाश्च पेशला मृदवश्च ये।
पांसुमुष्ट्येव मणयः श्रिया ते मलिनीकृताः ॥९॥
न श्रीः सुखाय भगवन् दुःखायैव हि वर्धते।
गुप्ता विनाशनं धत्ते मृतिं विषलता यथा ॥१०॥

'जैसे धूल के कण मणियों को मलिन कर देते है, वैसे ही बड़े–बड़े विद्वान, शूरवीर, दूसरे के उपकार न भूलनेवाले, दक्ष और मृदुभाषी पुरुषों को भी धन–सम्पत्ति मलिन कर देती है ॥९॥ भगवन्! सम्पत्ति की वृद्धि से दुःख ही होता है, सुख नहीं होता। जैसे विष–लता केवल मृत्यु का ही कारण होती है, वैसे ही श्री भी सुख का कारण न होकर दुःख ही का कारण होती है' ॥१०॥

मनोरमा कर्षति चित्तवृत्तिं कदर्थसाध्या क्षणभंगुरा च।
व्यालावलीगात्रविवृत्तदेहा श्वभ्रोत्थिता पुष्पलतेव लक्ष्मी ॥२॥

'यह लक्ष्मी मनोहर है, अतएव चित्तवृत्ति को अपनी ओर खींचती है। मरण, पतन आदि के कारण साहसिक कर्मों से प्राप्त होती है और बिजली के समान क्षणभर में नष्ट हो जाती है। अतः यह सर्पों से लिपटी हुई गढ़े में उत्पन्न हुई पुष्पलता के समान है।'

आयु भगती हुई चली जा रही है

लक्ष्मी की असारता कहकर श्री राम जी आयु के सम्बन्ध में कहते है:

आयुः पल्लवकोणाग्रलम्बाम्बुकणभंगुरम्।
उन्मत्तमिव संत्यज्ययात्यकाण्डे शरीरकम् ॥१॥
सर्ग १४॥

'जीव की आयु पत्ते के सिरे पर लटक रहे जल–बिन्दु (ओस) के सदृश अस्थिर है। वह उन्मत्त के समान असमय में ही कुत्सित शरीर को छोड़कर चली जाती है।'

युज्यते वेष्टनं वायोराकाशस्य च खण्डनम्।
ग्रथनं च तरङ्गाणामास्था नाऽऽयुषि युज्यते ॥५॥

'वायु का घेरा हो सकता है, आकाश के टुकड़े–टुकड़े किये जा सकते हैं और लहरें एक–दूसरे में माला की तरह गूँथी जा सकती हैं, पर आयु में विश्वास नहीं किया जा सकता।'

हाँ, अपने परम लक्ष्य की ओर चलनेवालों के लिए यह सुखप्रद है। इसके सम्बन्ध में श्री राम कहते हैं:

ते तु विज्ञातविज्ञेया विश्रान्ता वितते पदे।
भावाभावसमाश्वासमायुस्तेषां सुखायते ॥६॥

'जो लोग ज्ञातव्य वस्तु (आत्म–तत्त्व) को जान चुके हैं, आसीन ब्रह्म में विश्रान्त हैं और जिनके जीवन में लाभ–हानि तथा सुख–दुःख में चित्तवृत्ति समान रहती है, उन महापुरुषों की आयु ही लाभदायक है।' ॥६॥

तरवोऽपि हि जीवन्ति जीवन्तु मृगपक्षिणः।
स जीवति मनो यस्य मननेन तु जीवति ॥११॥

'वृक्ष भी जीते हैं और मृग–पक्षी भी जीते हैं, पर उसी पुरुष का जीना जीना है जिसका मन मनन के फलस्वरूप तत्त्वज्ञान से या वासना के क्षय से स्वच्छ हो जाता है।'

भारोऽविवेकिनः शास्त्रं भारो ज्ञानं च रागिणः।
अशान्तस्य मनो भारो भारोऽनात्मविदो वपुः ॥१३॥

'अपवित्र देह में आत्म–बुद्धि करनेवाले अविवेकी के लिए शास्त्र भारभूत है (भार के समान व्यर्थ श्रम का ही कारण है)। विषयानुरागी पुरुष के लिए तत्त्वज्ञान भार है। अशान्त पुरुष के लिए मन भार है और अनात्मवान् के लिए शरीर भार है।'

शेष अगले अंक में....

वैदिक विज्ञान में सृष्टि की मूल अवस्था

● **हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'**

वेद के अनुसार हिरण्यगर्भ उस स्थिति का नाम है जब सृष्टि निर्माण के सारे अणु–परमाणु उसमें समवेत होते हैं।

अतः प्रलयावस्था में प्रकृति अपने मूल रूप सत्त्व, रजस्, तमस् की साम्यावस्था में स्थिर रहती है व्यवहार न होने से अव्यक्त दशा में अदृश्य रहती है और जीवन मूर्छित अथवा सुषुप्ति की अवस्था में निष्क्रिय पड़े रहते हैं। देखें वेद प्रमाण–

'अमी ये देवाः स्थनत्रिष्वा रोचने दिवः। कद्वऋतंकदनृत क्व प्रत्नाव आहुतिर्वित्तं मे अस्य रोदसी।। (ऋ0 1, 105, 5)

जब सब लोकों का होम अर्थात् प्रलय होता है, तब कार्य जगत् कारण जगत् और जीव कहाँ रहते हैं? इसका उत्तर है कि सर्वव्यापक ईश्वर में और अन्तरिक्ष में कारण रूप में सारे जगत् के परमाणु और समस्त जीव उसमें सोए हुए रहते हैं। पश्चात परमात्मा ने जब अपने तेज के सामर्थ्य से 'सत्यम्' सत् प्रकृति में 'ऋत' की क्रिया उत्पन्न कर दी तब उससे महत् की उत्पत्ति हुई। इस महत् अर्थात् परमाणविक स्थिति के उपरान्त तुरंत ही उनमें अहंकार की स्थिति प्रकट हो गई। परमाणुओं में अहंकार की शक्ति प्रकट होते ही 'सत्त्व कण 'रजस्' कण और 'तमस्' कणों के गुणों का स्वरूप भी वैशिष्ट्य को प्राप्त कर लेता है। तत्पश्चात् पंचतन्मात्राओं का संगठन होने लगा। परमाणुओं में पंचतन्मात्राओं की स्थिति उत्पन्न होने से सृष्टि के विविध तत्त्वों का सूक्ष्म संगठन प्रारम्भ हो जाता है। जिसके सत्त्वमय कणों से सूर्य जैसे प्रकाश वाले लोक उत्पन्न हो गए और रजोमय कणों समूहों से चन्द्रादि लोक बनने लगे तथा तमोमय अणुओं से पृथिव्यादि की उत्पत्ति होने लगी, जिसके चारों तरफ कुहककोहरा के त्रसरेणुओं से जल की इस प्रकार **'समुद्रादर्णवादधि'** जलापूर्ण समुद्र से वह ढँकी हुई थी।

ब्रा0 में लिखा है **'इयम् (भूमिः) वा एषां लोकानां प्रथम सृज्यत।** अर्थात यह भूमि इन लोकों में (अन्यतम एवं) सर्व प्रथम उत्पन्न हुई। दैवी सृष्टि में **'भूः** 'व्याहृति की उत्पत्ति के समय ही भूमि बनी थी **'स भूरिति व्याहरत सभूमिमसृजत।**' (तै0 ब्रा0 2, 2, 2)

तात्पर्य यह कि पृथिवी चारों तरफ से समुद्र के घेरे में रहने के कारण उसे उसी क्रम से सृष्टि हुई कहा जाता है। क्योंकि वेद ने 'शरीरं छन्दः' (यजु0 15, 4) जिस प्रकार मातृगर्भ में शिशु के चारों ओर कलल रस विद्यमान रहता है, और उससे शिशु का संवर्धन एवं पोषण होता रहता है, उसी प्रकार इसके चारों ओर जल एवं उसके उपादान रजस् या कुहक स्थिति में विद्यमान थी। तत्पश्चात् हिमालय उसके बाद उससे द्वीप–द्वीपान्तर का क्रमशः आविर्भाव होने लगा।

इसलिए यही भूमि अरबों वर्ष के पश्चात् सर्वप्रथम वनस्पति एवं अनेक प्रकार के जीव जन्तु, पशु–पक्षी तथा सर्वश्रेष्ठ मानव जगत से पूर्ण होकर यह **'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'** बन गई।

पं. वीरसेन वेदश्रमी जी ने 'वैदिक सम्पदा' में लिखा है कि–

परमाणु की आज की वैज्ञानिक स्थिति बताती है कि उसमें इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रान होते हैं। प्रोटोन ही सत्त्व है, इलेक्ट्रान रजस् है जो गतिशील रहते हैं और प्रोटोन सत्त्व होने से केन्द्र में बने रहने वाला है, जिसके चारों ओर इलेक्ट्रोन चक्कर काटते रहते हैं। रजस् में ही गतिशीलता है। अतः इलैक्ट्रोन है। न्यूट्रोन तमस् भाग है। सत् प्रकाशमान है अतः वही भाग द्यु भाग तत्त्व है, रजस गतिशील भाग है जो मध्य का अन्तरिक्ष है। जिसमें गति होती है और तमस् जडत्व पृथिवी भाग है। अतः पृथिवी, द्यु और अन्तरिक्ष की स्थिति परमाणु से लेकर सारे ब्रह्माण्ड में है।

इस प्रकार पृथिवी के परमाणुओं में तमस् की प्रधानता है अतः रजस् और सत्त्व क्रमशः न्यून है। ऐसे परमाणु जब एक स्थान पर संग्रहीत हो जाते हैं तब वे एक कठोर स्थिति बना लेते हैं और इन्हीं की न्यूनाधिक स्थिति से पृथिवी के अन्य तत्त्वों का निर्माण होता है। पृ0 363।।

प्रकृति से सृष्टि के सम्बन्ध में कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन में वर्णन इस प्रकार किया है– **'सत्त्वरजस्तमसा साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान्, महतोऽहंकारोऽहंकरात् पंचतन्मात्राण भयमिन्द्रियं पंचतन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पंचविंशतिगणः'** अर्थात् सत्त्व (प्रकाश, बहना, प्रकाश) रजस् (द्रव्यत्व, स्तब्धपन गति) तमस् (सरलपन, ठोसपन, स्थिति) रूप शक्तियाँ हैं। ऐसी शक्ति रूपों की समावस्था, निश्चेष्टावस्था, प्रकट रूपावस्था को प्रकृति कहते हैं। प्रकृति का पहला रूपान्तर महत्तत्त्व है, महत्तत्व से अहंकार, अहंकार से पाँच सूक्ष्मभूत तन्मात्राएँ (तन्मात्राओं में सारे भूतों का बीज होता है) तथा उनसे पाँच स्थूलभूत, स्थूलभूतों (पंचतत्त्वों) से पाँच इन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और मन ये चौबीस और 25वाँ तत्त्व (चेतन पुरूष)। आत्मा से जब उनका संयोग हुआ तब शरीरधारी प्राणियों की उत्पत्ति होने लगी।

बस इतना ही यह संसार है। परन्तु अव्यक्त प्रकृति से लेकर मन इत्यादि इन्द्रियों तक ये सब जड़ ही हैं, पर जड़ तो स्वयं कुछ नहीं कर सकता। इस प्रकृति की विकृति और अव्यक्त को व्यक्त करने वाला जैसे परमात्मा है वैसे ही इन 24 तत्त्वों के द्वारा शरीरधारी प्राणियों को अधिष्ठाता आत्मा है, जैसा कि ऋग्वेद कहा है कि–

'तपुर्जम्भोवन आवातचोदितोयूथेन
साहवाँ अववतिवंसगः।
अभिव्रजनूनक्षितं पाजसारजः
स्थायुश्चरसंयमतपतत्रिणः।। ऋग्वेद

भावार्थ–मनुष्य को योग्य है कि अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, प्राण अर्थात प्राणादि दशवायु, इन्द्रिय अर्थात् श्रोत्रादि दश इन्द्रियों का प्रेरक इनका धारक और नियन्ता स्वामी, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और आदि गुणवाला जो है, वह इस देह में जीव है। ऐसा निश्चिय जानो।

ईश्वरीयज्ञानवेद द्वारा सृष्टि के तन्मात्राओं के विज्ञान की हमारे ऋषियों ने इस प्रकार व्याख्या की है– 'हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं (1) आँख (2) कान, (3) नाक, (4) जिह्वा, (5) त्वचा। आँख का देवता है अग्नि और गुण है रूप। अग्नि से आँखें रूप को देखती है। सूर्य अग्नि का गोला है इसलिए सूर्य, चाँद, तारे, दीपक, लालटैन, बिजली आदि सभी अग्नि से ही आते हैं। दूसरा है कान, इसका देवता है अन्तरिक्ष और गुण है 'शब्द'। वह कानों से सुनाई देता है। तीसरा है नाक, इसका देवता है पृथ्वी और गुण है गन्ध। जितनी भी गन्ध–दुर्गन्ध है हम नाक से सूँघते हैं। वह सब पृथ्वी से मिलती है। चौथी है जिह्वा, इसका देवता है पानी और गुण है रस। जितने भी रस हैं वे सब पानी से ही प्राप्त होते हैं और जिह्वा उनका स्वाद लेती है। पाँचवीं इन्द्रिय है, त्वचा और इसका देवता है हवा और गुण है स्पर्श। जितने भी हम ठण्डे–गर्म का अनुभव करते हैं वह हवा से हमको मिलते हैं और स्पर्श का अनुभव करते हैं।

इन पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ उन गुणों को अपने पास नहीं रखती। वे सब आत्मा को देती हैं और आत्मा इन सब गुणों का अनुभव करती है। सुख–दुःख भी शरीर अनुभव नहीं करता इसमें विद्यमान आत्मा ही करती है। कारण, सब इन्द्रियाँ व शरीर तो जड़ हैं। जड़ को कोई अनुभव नहीं होता। आत्मा चेतन है, वही सब गुणों का और सुख–दुःख का अनुभव करती है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि सृष्टि के पूर्व सभी अद्रव्यमान परमाणु उड़ते रहे होंगे। तब उसी सर्जक परमाणु ने उनमें प्रवेश किया होगा और तभी उन द्रव्यमान परमाणुओं के समूहों से पंचतत्त्व एवं सूर्य चन्द्रादि नक्षत्रों का निर्माण हुआ होगा। अतः वैज्ञानिकों ने उसी सर्जक विशेष परमाणु को 'गॉड पार्टिकल' अर्थात भगवान् का कण कह दिया। किन्तु वह परमात्मा नहीं है, परमात्मा तो उससे तथा आत्मा से भी सूक्ष्म सर्वगुण वाला है। क्योंकि उस सर्जक परमाणु को सामर्थ्ययुक्त बनाने वाला ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं हो सकता।

ऋग्वेद में तो इसकी पहले ही घोषणा हो गई है। यथा– **यत्वातुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे।** अर्थात स्थूल, सूक्ष्म, कारण और परमकारण पदार्थों में चौथी संख्या पूरण करने वाले परमेश्वर हैं। तात्पर्य यह कि 'उस परमकारण=अभीष्ट परमाणु को सृजनकारक बनाने वाला परमेश्वर ही है।

मु.पो. भुरारई
जिला वीरभूमि (पं. बंगाल)

जब सब लोकों का होम अर्थात् प्रलय होता है, तब कार्य जगत् कारण जगत् और जीव कहाँ रहते हैं? इसका उत्तर है कि सर्वव्यापक ईश्वर में और अन्तरिक्ष में कारण रूप में सारे जगत् के परमाणु और समस्त जीव उसमें सोए हुए रहते हैं। पश्चात परमात्मा ने जब अपने तेज के सामर्थ्य से 'सत्यम्' सत् प्रकृति में 'ऋत' की क्रिया उत्पन्न कर दी तब उससे महत् की उत्पत्ति हुई। इस महत् अर्थात् परमाणविक स्थिति के उपरान्त तुरंत ही उनमें अहंकार की स्थिति प्रकट हो गई। परमाणुओं में अहंकार की शक्ति प्रकट होते ही 'सत्त्व कण 'रजस्' कण और 'तमस्' कणों के गुणों का स्वरूप भी वैशिष्ट्य को प्राप्त कर लेता है। तत्पश्चात् पंचतन्मात्राओं का संगठन होने लगा। परमाणुओं में पंचतन्मात्राओं की स्थिति उत्पन्न होने से सृष्टि के विविध तत्त्वों का सूक्ष्म संगठन प्रारम्भ हो जाता है। जिसके सत्त्वमय कणों से सूर्य जैसे प्रकाश वाले लोक उत्पन्न हो गए और रजोमय कणों समूहों से चन्द्रादि लोक बनने लगे तथा तमोमय अणुओं से पृथिव्यादि की उत्पत्ति होने लगी, जिसके चारों तरफ कुहककोहरा के त्रसरेणुओं से जल की इस प्रकार 'समुद्रादर्णवादधि' जलापूर्ण समुद्र से वह ढँकी हुई थी।

जीवन–कला सुमन्त्र

● देवनारायण भारद्वाज

दोनों, पति और पत्नी का पृथक्–पृथक् ही नहीं सम्मिलित प्रभाव भी समाज पर पड़ता है; और समाज भी इनको अपने प्रभाव में ढालने के लिए यत्नशील रहता है। पति अधिकारी, कर्मचारी, व्यापारी, प्राध्यापक, अधिवक्ता, अभियन्ता, चिकित्सक किसी भी क्षमता से जब अपने कार्यस्थल पर पहुँचता है और यदि वह किंचित् असामान्य या विवादयुक्त व्यवहार करता है तो लोग यही कहते हैं – लगता है आज श्रीमान् घर से लड़ कर आये हैं। इस प्रकार परिवार से समाज, समाज से परिवार तक व्यक्तित्व के विकास–ह्रास की ये द्विपथी प्रणाली निरन्तर चलती रहती है और अनजाने ही हम अपना एक निश्चित् रूप निर्धारण कर लेते हैं।

आपके हाथ में एक फूल है – रंगीन व सुगन्धित, या आपके हाथ में एक फल है सुन्दर और स्वादु। इनके गुणों की क्या गणना ! एक फूल या फल यों ही नहीं बन गया। इसके पीछे एक पादप था। पादप में जड़ें, शाखायें, टहनियाँ व पत्तियाँ थीं। इनसे भी पीछे माली का पोषण और प्रशिक्षण था। इसी प्रकार मधुर जीवन–व्यवहार और लोकप्रिय आकर्षक व्यक्तित्व के निर्माण में कोई एक तत्व नहीं, अपितु अनेक कारकों का समावेश होता है।

क्षण–क्षण के तीक्ष्ण वाक्यबाण घर–परिवार–समाज यहाँ तक पति–पत्नी व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं, इनको यदि उचित मोड़ दे दिया जाता है तो कुशल अन्यथा उथल–पुथल हो जाती है·

आकर्षक व्यक्तित्व के निर्माण में जिन तत्वों की अपरिहार्य सहभागिता है, उनका वर्णन पत्नी देवता वाले उक्त संदर्भित वेद–मंत्र में हमें सहज ही मिल जाता है। देखिये –

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति,
एताते़ऽघ्नये नामानि देवेभ्यो या सुकृतं ब्रूतात्।। (यजु08–43)

'इडे' – विद्यादि प्रशंसनीय गुण होना आवश्यक है। विद्या से ही कार्य में कुशलता आती है। कार्य–सक्षम होने पर भी अभिमान नहीं होना चाहिए। अभिमानी होने पर सक्षम व्यक्ति से भी लोग दूर रहेंगे। विद्या–बुद्धि के साथ–साथ व्यक्ति में नम्रता–सुकोमलता का विकास वैसे ही होना चाहिए जैसे फलों से लद जाने पर वृक्षों की टहनियाँ झुक जाती हैं। ऐसा व्यक्ति 'रन्ते' रमणीक–रमणीय सहज व सुन्दर हो जायेगा, तो अन्य लोग उससे श्रद्धा करेंगे और उसके समीप जायेंगे। कुशलता और कोमलता अथवा विद्या या सुन्दरता – 'हव्ये' अर्थात् हवि या रचनात्मक साधन–सामग्री से परिपूर्ण होनी चाहिए। विद्या–सुन्दरता या वस्तु–भण्डार इनमें से कुछ या सब कुछ जब आपके पास होगा तभी आपका 'काम्ये' कमनी मनमोहक स्वरूप किसी को अपनी ओर आकर्षित कर सकेगा। लोग अपनी कोई कामना लेकर आपके पास आयेंगे। कामना पूर्ण कर देने पर वही व्यक्ति 'चन्द्रे' अत्यन्त आनन्द देने वाला बन जायेगा। चन्द्रमा की चन्द्रिका अपने शीतल–प्रकाश के लिए प्रसिद्ध है। यह आदान–प्रदान की सूचक भी है। चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश लेता है – पृथ्वी को देता भी है – वह भी सूर्य की प्रचण्ड ऊष्णता का क्षरण कर मोदमय शीतल स्वरूप में। चन्द्रमा चाहे द्वितीया का हो या पूर्णिमा का उसके राज्य में तारागण मुंदते नहीं टिमटिमाते रहते हैं, जबकि सूर्य के राज्य में सब छिप जाते हैं – वह अकेला ही रह जाता है। 'चन्द्र' स्वभाव होने पर व्यक्ति 'ज्योति' – श्रेष्ठ शील से ज्योतित हो उठेगा। अग्नि की ज्वाला और दीपक जलते रहते हैं। ज्वाला अपनी लपट में लपेट कर अपने आधार को राख करके स्वयं अस्तित्व खो देती है, किन्तु दीपक की ज्योति एक परंपरा बन जाती है। परम्परगत त्याग की शक्ति विकसित होने पर व्यक्ति में 'अदिते' – आत्मिक दृढ़ता स्थापित होती है और साथ ही उसे अन्धविश्वास – आडम्बर से रहित 'सरस्वती' – प्रशंसित विज्ञानमयी बुद्धि और सरस वाणी प्राप्त हो जाती है। यही सरस्वती व्यक्ति को ऊँचा उठाकर 'महि' चरमोत्कर्ष, सफलता एवं उच्चता तक पहुँचा देती है। महि भूमि को भी कहते हैं जिस का विशेष गुण क्षमा होता है। 'क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात' की बात इसी से पूर्ण होती है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि आकाश तक सिर ऊँचा उठ जाने पर भी चरण धरती पर जमे रहने चाहिए। ऊँचाइयों पर चढ़ने के बाद भी 'विश्रुति' –वेदाध्ययन–पठन–पाठन–स्वाध्याय और अच्छी–अच्छी बातें जानने के लिए अपने मस्तिष्क के द्वार बन्द नहीं कर लेने चाहिए।

उक्त क्रमानुसार जिस व्यक्ति का विकास होगा वह वास्तव में 'अघ्नये' अताड़नीय हो जायेगा। जिसका लोग आदर करेंगे, श्रद्धा रखेंगे, प्रेरणा व सहायता प्राप्त करेंगे, उसे कौन मारेगा, प्रत्युत उसकी तो भरपूर रक्षा की जायेगी। ये वेद–वर्णित शब्द कोरे सिद्धान्त के बोधक नहीं, अपितु नितान्त व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत करते हैं। यदि पत्नी के नाम इडा, रन्ती, हविष्मती, चन्द्रमुखी, ज्योति, अदिति, सरस्वती, मही व श्रुति हो सकते हैं तो पति के भी इडापति, रन्तिदेव, हविष्मन्त, चन्द्र, ज्योतिस्वरूप, आदित्य, सारस्वत, महीपति व श्रवण नाम हो सकते हैं। जैसे योग्य चिकित्सक एक आरोग्यकारी औषधि का निर्माण करने के लिए भाँति–भाँति की अनेक जड़ी–बूटियों का मिश्रण तैयार करता है और रोगी को एक छोटी पुड़िया पकड़ा देता है, उसी प्रकार यह वेदमन्त्र भी अनेक प्रतीकों के योग से एक सूत्र का सर्जन करता है, जो किसी भी व्यक्ति को लोकप्रिय बना सकता है। विद्या + रमणीयता ± साधन सम्पन्नता ± कामनापूर्ति ± आनन्द आदान प्रदान ± श्रेष्ठ शील युक्त सुकीर्ति ± आत्मविश्वास की दृढ़ता ± आडम्बर पाखण्ड रहित बुद्धि व वाणी ± उच्चता ± आजीवन ज्ञानार्जन व गुण ग्रहण = लोकप्रिय मधुर व्यक्तित्व। यहाँ पर धन व तीर के चिन्ह इसलिए अंकित किये गये हैं, क्योंकि एक प्रतीक के होने से दूसरा प्रतीक प्रकट होने लगता है और इन सभी प्रतीकों का महायोग ही लोकप्रियता का अन्तिम परिणाम है। साथ ही एक प्रतीक की प्राप्ति का संकेत उससे अगले प्रतीक से होता है।

आपके हाथ में एक फूल है – रंगीन व सुगन्धित, या आपके हाथ में एक फल है सुन्दर और स्वादु। इनके गुणों की क्या गणना ! एक फूल या फल यों ही नहीं बन गया। इसके पीछे एक पादप था। पादप में जड़ें, शाखायें, टहनियाँ व पत्तियाँ थीं। इनसे भी पीछे माली का पोषण और प्रशिक्षण था। इसी प्रकार मधुर जीवन–व्यवहार और लोकप्रिय आकर्षक व्यक्तित्व के निर्माण में कोई एक तत्व नहीं, अपितु अनेक कारकों का समावेश होता है।

एक–एक ग्रास से हमारी क्षुधा शान्त होती है। एक–एक दिन के भोजन से हमारा रक्त–माँस–मज्जा और ऊर्जा बनते हैं – पर धीरे–धीरे, एकदम नहीं। इसी प्रकार मंत्र में व्यक्त अभिलक्षण भी व्यक्ति में शनैः–शनैः प्रवेश करके उसके व्यक्तित्व को संस्कारित करते रहते हैं। उसे पता नहीं चल पाता है और वह महान् जनप्रिय बन जाता है। कहा गया है –

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।।

पर फल टपकने में देर नहीं लगती है। व्यक्ति को ऊँचा उठने में समय लगता है गिरने में देर नहीं लगती। अतएव उठने के बाद गिरने से बचने के लिए सावधानी अपरिहार्य है। ऊपरी मंजिलों पर सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हैं पर गिरने पर सीढ़ियाँ एकदम छूटती चली जाती हैं और व्यक्ति यकायक धड़ाम से नीचे आ जाता है।

जीवन जीने के दो व्यावहारिक पक्ष स्पष्ट हैं। एक घर के भीतर–दूसरा घर के बाहर। दोनों एक दूसरे को पालित, पोषित और पल्लवित करते हैं। घर से निकलते समय पारिवारिक माधुर्य को साथ लेकर जायें और घर में प्रवेश के समय बाहर के कलुष को वैसे ही बाहर रहने दें – जैसे स्वादिष्ट फल का रस मुँह में और छिलका बाहर।

किसी व्यक्ति को पता चला अमुक परिवार में अमृत फल है। वे उसके दर्शन हेतु वहाँ पहुँचे। वहाँ एक कृशकाय अतिवृद्ध व्यक्ति से भेंट हुई जिसने बताया कि अमृतफल मेरे यहाँ नहीं मेरे बड़े भाई के यहाँ है, वे पर्वत की तहलटी में रहते हैं। वे सज्जन वहाँ भी पहुँच गये। एक अधेड़ व्यक्ति से भेंट हुई। उसने कहा कि अमृतफल मेरे पास था, किन्तु अब नहीं है। हाँ, मेरे बड़े भाई जो पर्वत के ऊपर रहते हैं – उनके पास है। सज्जन चढ़ाई को पार कर वहाँ भी जा पहुँचे और देखकर विस्मित हो गए कि ये सबसे बड़ा भाई तो जवान है। उनसे भी अमुतफल की चर्चा हुई तो बड़े भाई ने दर्शन कराने का आश्वासन दे दिया। उस सब से बड़े भाई ने अतिथि का स्वागत किया और कई दिन तक उनका आतिथ्य करते रहे। एक दिन सज्जन बोले, ''मुझे अमृतफल का आपके यहाँ आभास तो हो रहा है। आप के घर की सुख–शान्ति–सन्तोष को देखकर, पर कृपया दर्शन भी करा दें ताकि मैं अपने नगर को प्रस्थान करूँ।'' बड़े भाई ने भोजन परोसने आई अपनी पत्नी की ओर संकेत करके कहा कि यही हमारा अमृत फल है। अतिति सज्जन को मझले भाई की विवशता स्मरण हो उठी। जब उनको एक बार ही भोजन कराने के लिए पत्नी की झाड़ सुननी पड़ी थी और सबसे छोटे भाई तो घर में एक बार अल्पाहार भी नहीं करा सके थे, होटल में चायपान कराके क्षमा माँग ली थी। जबकि सबसे बड़े भाई के यहाँ सुलभ आतिथ्य सहर्ष मिला और यही इनकी जवानी का रहस्य भी है। गृहणी या पत्नी रूपी फल तो सर्वत्र है, पर जहाँ वे अमृत फलरूप धारण कर लेती है, वहाँ मानव का व्यक्तित्व शालीन, सुहृद एवं सौम्य बन जाता है और इस प्रकार परिवार के व्यवहार में संसार का श्रृंगार देदीप्यमान हो उठता है।

45 पी, अवन्तिका (ए.डी.ए.) कालोनी,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

ऋषि दयानन्द के आदर्श दो नीति श्लोक

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथों में यों तो शतशः नीति श्लोक उद्धृत किये हैं किन्तु दो श्लोकों की अपनी विशिष्टता है। संस्कृतक नीति शिक्षा परमें ग्रन्थों का बाहुल्य है। मनुस्मृति के अतिरिक्त विदुर नीति (महाभारतान्तर्गत) शुक्र नीति, कामन्दक नीति सार, चाणक्य नीति आदि की गणना पुमुख नीति ग्रन्थों, में होती है। ऋषि दयानन्द के जीवन और कर्त्तव्यों के निर्धारण में महाराज भर्तृहरि के नीति शतक (संख्या 85) के निम्न श्लोक का प्रमुख स्थान रहा है। इसे महाराज ने स्वयं सत्यार्थप्रकाश की समाप्ति पर लिखे गये स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में उद्धृत किया है। प्रासंगिक श्लोक है–

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु व यथेष्ठम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

नीति निपुण लोग हमारी निन्दा करें या स्तुति करें, लक्ष्मी आये या चली जाये, आज ही मृत्यु हो या युगों तक हम जीवित रहें। वस्तुतः धैर्यवान पुरुष न्याय के मार्ग से कदापि विचलित नहीं होते।

ऋषि ने इस श्लोक में कथित तीनों बातों को अपने जीवन में अक्षरशः उतारा था। उनके काल में तथा उनके बाद भी उनके निंदकों की कभी कमी नहीं रही। विरोधी पण्डितों ने उन्हें ईसाई प्रचारक, गुप्त ईसाई, धर्म विनाशक क्या–क्या नहीं कहा? अनेक स्थानों पर विरोधियों ने उन पर ईंट–पत्थर बरसाये, गाली–गलौज किया। पूना में तो उनका अपमान करने की हद हो गई, जब दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने उनके सम्मान में निकाली शोभायात्रा के समानान्तर गधे का जुलूस निकाला और उनके प्रति अवाच्य वर्षण किया। तथापि इन विपरीत स्थितियों में भी वे निर्विकार, अविचल तथा स्थिरमति रहे। गीता कथित स्थित प्रज्ञ व्यक्ति के लक्षण उनमें पूर्णतया घटते हैं जब वे सुख–दुःख, लाभ अलाभ– जय–पराजय में निर्विकल्प निर्विकार रहते हैं।

इसके विपरीत उनके जीवन काल में उनकी प्रशंसा भी कम नहीं हुई। राजा–प्रजा ने तो उनको सराहा ही किन्तु उनकी कीर्ति सुरभि सात समुद्र पार अमेरिका तक पहुंची जब थियोसोफी के संस्थापकों ने उनके विचार जाने और उनसे प्रत्यक्ष भेंट करने के लिए सात समुद्र पार कर भारत में आये। निष्पक्ष राजनेताओं और प्रशासकों ने उन्हें आदर दिया तथा सुधारक समुदाय (ब्राह्म नेता देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशवचन्द्र सेन आदि) ने उन्हें भारत का प्रमुख धर्म सुधारक ताथा समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाल समझा।

जहां तक धन–सम्पत्ति का संबंध है, इनके प्रति उनमें किसी प्रकार का मोह या आसक्ति नहीं थी। अपने धनाढ्य पिता का समपन्न घर छोड़कर वे वैराग्य पथ के पथिक बने थे। उन्होंने ऊखी मठ के महन्त द्वारा प्रस्तावि इस मठ के महन्त की गद्दी अस्वीकार कर दी। उदयपुर महाराजा द्वारा एकलिंग महादेव के मंदिर का अधिकार लेने के प्रलोभन को ठुकराते उन्हें एक क्षण भी नहीं लगा। जब काशी के पण्डितों ने उनसे आग्रह किया कि वे मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ दें तथा बदले में शंकराचार्य की पीठ के अधिष्ठता बन जायें तो इस प्रस्ताव को ठुकराने में उन्होंने देर नहीं की। संसारिक वैभव से कन्नी काटने वाला ऐसा इन्सान तो फरिश्ता ही कहला सकता है।

जहां तक जीवन और मृत्यु का प्रश्न है, उनके प्राणहरण की अनेक चेष्टाएं की गईं, अनेक बार विष दिये गये, उन पर तलवार से प्रहार का दुस्साहस (वृटव्य राव कर्ण सिंह का प्रसंग) भी किया गया। अन्ततः आततायियों के षड्यंत्र के शिकार होकर उन्होंने अपनी जीवन लीला को समाप्त भी कर दिया, किन्तु अपने धर्म, सत्य और न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं हुए। सचमुच उन्होंने भर्तृहरि के उक्त श्लोक कथित आदर्श को अपने जीवन का आदर्श बना लिया था

एक अन्य नीति श्लोक ने उन्हें प्रभावित किया। वह था महाभारतन्तर्गत उद्योग पर्व की विदुर कथित उक्ति। अपने छोटे भाई नीतिमान् विदुर को जब अग्रज धृतराष्ट्र ने बुलाया और अपनी सम्मति देने को कहा, इसे महाभारतकार ने विस्तार से उद्योग पर्व में लिखा है। यहां विदुर कहते हैं–

बहवः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

महाभारत (उद्योगपर्व अध्याय 36–15)

हे राजन् ऐसे पुरुष बहुत होते हैं जो प्रियवादी होते हैं। अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए अतिशयोक्ति करने से भी नहीं चूकते, कभी–कभी मालिक को खुश करने के लिए उन्हें झूठ बोलने से भी परहेज नहीं होता। परन्तु ऐसे वक्ता और उनके श्रोता तो दुर्लभ ही हैं जो उस कटु सत्य को कहने में संकोच नहीं करते जो सुनने वाले के लिए हितकारी होता है, भले ही उसमें अप्रियता झलकती हो। खुद स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में इसी आदर्श को अपने सामने रखा। उन्होंने सत्य, न्याय और धर्म को आगे रखकर ही बातें कहीं। कहीं भी सामने वाले को, चाहे वह कितना ही बड़ा शक्तिशाली सामन्त ही क्यों न हो, खुशामद भरी बात नहीं की और न मुंह देखी बात की। उनका साक्षात्कार उस युग के राजा महाराजाओं, उच्च प्रशासनिक अधिकारियों तथा सामान्यजनों से होता था, परन्तु उन्होंने कभी लाग लपेट बातें नहीं कीं। नीतिकार ने यह तो कहा है कि सत्य बोलो, पिय बोलो। एक कदम आगे रखकर दयानन्द ने कहा कि अप्रिय सत्य कहने में भी कभी संकोच मत करो। वे सबसे यह अपेक्षा रखते थे कि वे विदुर की इस उक्ति को अपने जीवन का आदर्श बनायें।

–3/5 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

दयानन्द पीठ द्वारा ऐसे शोध प्रयोग किये जायें

● रामस्वरूप

महर्षि का संकेत है 'शिक्षा वह है जिससे विद्या जितेन्द्रियता धर्मात्मता सभ्यता आदि बढ़े। अतः शैक्षिक उपाधि पाठ्यक्रमों शिक्षा प्रथमा (प्राइमरी) शिक्षा मध्यमा (सेकेंडरी) शिक्षा स्नातक (बी.एड) शिक्षा अधिस्नातक (एम.एड.) आदि में वेदशास्त्र के उन अंशो को संकलित विश्लेषित करना चाहिये। शिक्षक, व्याख्याता, प्राध्यापक आदि के लिए संवाद व कार्यशाला करते कराते रहना। संस्कृत हिन्दी पंजाबी में, आगे असमी, कश्मीरी, मराठी, तमिल भाषा आदि में। जब साधन बढ़े तो पड़ोसी 9 देशों की भाषाओं में, और आगे संयुक्त राष्ट्र संघ/यू.एन.ओ. की 6 भाषाओं आदि में।

शाब्दिक शोध (एकेडेमिक रिसर्च) प्रोन्नत प्रयोग (अपलिफ्ट एक्सपेरीमेंट) प्रशिक्षण–कौशलवर्धन, शिक्षा–औपचारिक अनौपचारिक निरूपचारिक, व प्रसार, मुद्रित व विद्युतकणीय (इलेक्ट्रॉनिक) माध्यम से करते रहना होगा।

दयानन्द पीठ के लिए टोली बने उसमें विद्या पुस्तक (वेद), वैदिक पुराण (ब्राह्मण आरण्यक उपनिषद) वेदोपांग–षड्दर्शन, उपवेद, वेदांग के उद्भट विद्वान हों। दैविक पुराण (अग्नि+वायु+सोलह), जैनागम बौद्धपिटक, गुरुग्रन्थ, तिरूलकुरूल आदि, पड़ोसी देश ईरान – जेंदाववस्ता, दूरदेश के पुरानी व नयी इंजील, कुरान आदि के भी विशेषज्ञ हों। गुरुग्रन्थ का संस्कृत अनुवाद कराया जाये अन्य प्रेरणा ग्रन्थों का भी।

वैदिक परंपरा में **'ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका'** महर्षि कृत के **'वेद विषय विचार'** में बताया ऋक् यजुः साम अथर्व के विषय हैं क्रम से ज्ञान, कर्म, उपासना विज्ञान। तो ज्ञान और विज्ञान में क्या अनुभव रहित व अनुभव सहित स्थिति का अंतर है, यह शोध हो। विज्ञान यानी विशुद्धज्ञान है या विवेकयुक्त ज्ञान है। मानव मात्र 'विज्ञान' को प्राप्त हो सहजता से, इसके शोध प्रयोग हों। अंग्रेजी में साइंस शब्द का अनुवाद 'विज्ञान' कर दिया तो इस मतिभ्रम (इल्यूजन) को ठीक करने का शोध हो। साइंस के लिए शब्द 'शास्त्र' ज्यादा ठीक है। संस्कृत के 'सांख्य' शब्द का ध्वनि साम्य 'साइंस' से है।

भूमिका में आरम्भ से वेद संज्ञा तक, ग्रन्थ प्रामाण्य से ग्रन्थ संकेत तक सब को स्पष्ट व पुष्ट करने का शोध हो। बीच में ब्रह्म विद्या से पंचयज्ञ तक जो है वे सब 'वेद सब सत्य विद्याओं के पुस्तक है' इसकी व्याख्या है, इन्हें भी स्पष्ट पुष्ट किया जाये। ऋक् 7.61.3 से संज्ञान सूक्त, साम, अथर्व का भाष्य संस्कृत में महर्षि की पंचपदी शैली से कराया जाये। फिर हिंदी (आर्य भाषा) पंजाबी आदि में अनुवाद भी हो।

वेद पदों के चतुर्भाषी कोश भी बनें। मूल पद का संस्कृत अनुवाद फिर आर्यभाषा (हिंदी) पंजाबी आगे अन्य भारतीय भाषा, संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं व अंग्रेजी, फिर अन्य भाषा। इस प्रकार के कोश द्वारा गुरुकुल और डी.ए.वी. अथवा आर्य शिक्षालयों के शिक्षकों की दुविधा मिटेगी।

सत्य (के) अर्थ (का) प्रकाश मानव का उत्थान करने में उपयोगी है अतः 'मानव एकता' को अग्रसर किया जाए। पहले समुल्लास से संप्रदाय सद्भाव, दूजे से निरुपचारिक सुशिक्षा 3 से औपचारिक सत् शिक्षा, 4 संतुष्ट संयमी दांपत्य, 5 पराविवाहितों से अनौपचारिक शिक्षा, 6 लोक स्वराज्य – किसान आदि हितैषी, 7 जगत्नियंता बोध, 8 सृष्टि हितकारी मानव, 9 मुक्ति और अनाग्रह, 10 सदाचार एवं गव्यशाकाहार। ये सब संपूर्ण मानव समाज को सुलभ कराने वाले शोध प्रयोग कराएं जाएं। भाषा संस्कृत हिंदी

शेष पृष्ठ 11 पर

गाय का आर्थिक पक्ष

● वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

3-4 नवम्बर के 'आर्य जगत्' में आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी का लेख 'गायों का महत्त्व' पढ़ा। आचार्य जी को बहुत-बहुत साधुवाद ऐसे उपयोगी लेख के लिए। 1967 में भी गोरक्षा आन्दोलन हुआ था जिसे प्रधानमन्त्री इंदिरागांधी ने कुचलवा दिया था। तब नारे लगे थे- गाय हमारी माता है। देश धर्म का नाता है। इस नारे से काम नहीं चलेगा क्योंकि गोघातक तथा वैदिक धर्म एवं संस्कृति के विरोधी भारत में पर्याप्त हैं तथा क्रियाशील हैं, जबकि गोभक्त उतने क्रियाशील नहीं। महर्षि दयानन्द ने कभी भी गाय को धर्म से नहीं जोड़ा। उन्होंने *'गोकरुणानिधि'* लिखी, गोहत्या के विरोध में जनता को हस्ताक्षर कराकर भी साम्राज्ञी को भेजे। स्वामी जी ने गाय की आर्थिक उपयोगिता पर प्रकाश डाला है। यही पक्ष अनिवार्य एवं सामाजिक है।

भारत सरकार विशेषतः कांग्रेसी सरकार तो प्रारम्भ से ही गोवध के पक्ष में रही है क्योंकि उसके सर्वेसर्वा नेहरूजी थे जो अपको आपने पण्डित या हिन्दू मानते ही न थे। उनके प्रयास से ही गोवध जारी रहा तथा आज भी जारी है। इसके पीछे सरकार का एक तर्क विदेशी मुद्रा प्राप्ति है। गाय ही नहीं, अन्य पशुओं का निर्यात भी प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है। सन् 2009 में भारत ने छह लाख टन मांस का निर्यात किया था जबकि 2012 में यह निर्यात 15 लाख टन हो गया, यानी ढाई गुना अधिक, वह भी केवल चार वर्ष में है। 2007 में मांस का निर्यात करने वाले देशों में भारत पन्द्रहवें नम्बर पर था, तो 2012 में दूसरे स्थान पर आ गया। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में 27 हजार करोड़ की लागत से अति आधुनिक बूचड़खाने बनवाने की योजना मे है। यह सब आर्थिक लाभ के लिए है, जिस प्रकार शराब की वृद्धि भी आर्थिक लाभ के लिए ही की जाती है। इस गणित में केवल केन्द्र सरकार की नहीं, अपितु राज्य सरकारें भी शामिल रहतीं हैं। तभी तो यह देश शराब तथा मांस का देश बनता जा रहा है। इसलिए धर्म के नाम पर तो इनकी रोकथाम नहीं की जा सकती। हाँ, यदि गाय के आर्थिक पक्ष को सामने लाया जाए तो कदाचित् सफलता मिल जाए। आचार्य के लेख में राजीव भाई के जिस मुकदमे तथा उसमें प्राप्त विजय का वर्णन है, वह तभी सम्भव हुआ जबकि माननीय न्यायाधीश के सामने उन्होंने प्रमाण पूर्वक गाय के आर्थिक पक्ष को प्रस्तुत किया।

यह गोरक्षा के विषय मे बहुत बड़ी विजय और उपलब्धि है, किन्तु प्रश्न है कि गाय के इस आर्थिक पक्ष से भारतीय जनता तथा शासकगण कितने परिचित हैं? राजीव जी गाय के एक किलो गोबर से 33 किलो खाद बनाकर एक गाय के गोबर से प्रतिदिन 1800 से 2000 रुपये की खाद बनाने की बात कह रहे हैं। यदि यह प्रमाणाधारित है तो इस प्रक्रिया को प्रत्येक गाँव में फैलाने की आवश्यकता है। आज किसान यूरिया आदि खाद डालकर परेशान हो गया है। एक तो इसकी कीमतें लगातार बढ़ता जा रही है, दूसरे, इससे भूमि बजंर होती जा रही है। खाद न डालने से फसल होती ही नहीं। तीसरे, यह खाद तो विष है। यही विष अन्न में तथा पशुओं के दूध में आ रहा है। उससे नाना नई-नई बीमारियाँ पनप रही हैं, जो पहले नहीं होती थी। पंजाब तो इसी खाद के कारण कैंसर की चपेट में आ चुका है क्योंकि। सर्वप्रथम पंजाब में ही इसका प्रचलन हुआ था। यदि किसानों को यह पता चल जाए कि गाय का गोबर इतना उपयोगी है तो वे दौड़कर इस प्रक्रिया को अपना लेंगे तथा गोपालन प्रारम्भ कर देंगे, जो कि आजकल भार समझकर उन्होंने बन्द कर दिया है। आवश्यकता है गाय के गोबर से खाद बनाने की इस विधि का युद्धस्तर पर गाँव-गाँव में प्रचार करने की। इसके लिए संसाधन एवं व्यक्तियों की आवश्यकता भी पड़ेगी। इस पर विचार करके विस्तृत कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है। हो सकता है राजीव जी के पास इतने साधन तथा समय न हो कि वह सभी प्रांतों में इस अभियान को चला सकें। इसके लिए तो गोभक्त जनता तथा किसानों को भी साथ लगना पड़ेगा।

यही बात मैथेन गैस की है। यदि व्यापक स्तर पर इसका उत्पादन किया जा सके तो कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो 50-60 पैसे प्रति किलोमीटर के स्थान पर 4/- प्रतिकिलो मीटर पेट्रोल पर खर्च करेगा? इसलिए आवश्यकता है जनजागरण की तथा खाद एवं गैस के रूप में ग्राम के आर्थिक पक्ष को सर्वविदित करने की। इसके लिए तो देशव्यापी अभियान चलाना पड़ेगा। अभी तक तो जनता को गाय की आर्थिक उपयोगिता तथा 26-10-2005 के माननीय न्यायालय के आदेश की जानकारी भी नहीं है।

निश्चित रूप में यह हिन्दू जनता ऐसा नहीं करेगी, क्योंकि यह चेतनाहीन तथा संवेदनाहीन है। इसके लिए आर्य समाज को ही प्रबुद्ध हिन्दू भाईयों, साधु-सन्तों आदि को साथ लेकर अभियान चलाना होगा। मुसलमान भी इस अभियान में साथ देंगे क्योंकि खाद की समस्या तो उनकी भी है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में *'गोमांस निर्यात रोको संगठन'* में अधिकतर किसान तथा कसाई ही हैं। सहारनपुर में गो मांस के निर्यात का विरोध करने वाले संगठन के संयोजक मोहम्मद इरफान का कहना है कि यदि गाय और भैंस के मांस का निर्यात नहीं रोका गया तो बच्चों को दूध भी नहीं मिलेगा। इसलिए यह अभियान तो गाँव-गाँव में जाना चाहिए। इसमें हिन्दू-मुसलमान सभी सम्मिलित होंगे। जनता का प्रबल दबाव पड़ने पर ही सरकार कुछ करेगी, अन्यथा यही होगा कि उत्तर प्रदेश में एस.पी. की सरकार आते ही मुलायम सिंह ने बन्द पड़े हुए कत्लखानों को फिर से चालू करा दिया।

यद्यपि गोवध रोकने के पक्ष में न्यायालय का निर्णय आ गया है, किन्तु पाँच वर्ष बीतने पर केन्द्र सरकार तथा किसी भी राज्य ने गोवध निरोधक कानून नहीं बनाया है। यदि पचास वर्ष बीत जाएँ तब तक जनता का दबाव नहीं पडेगा, कोई भी सरकार ऐसा कानून नहीं बनाएगी। अतः विधायकों, सांसदों तथा जनता को मिलकर इस दिशा में ठोस प्रयास करना होगा।

एक अन्य पक्ष भी है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। वह यह कि भारत कृषि प्रधान देश है तथा यहाँ पर कृषि का आधार बैल ही रहे हैं, किन्तु अब हालात ऐसे नहीं हैं। आज बैलों का स्थान ट्रेक्टर-ट्राली ने ले लिया है तथा जो बैल पहले गाड़ी खींचते थे उनका स्थान भैंसों ने ले लिया है। अब किसानों के पास भैंसा-बुग्गी हैं, बैलगाड़ी नहीं ये बैल ही सवारी ताँगें में भी चलते थे। बारात भी बैलों से ही जाती थी, किन्तु आज इनका स्थान वाहनों ने ले लिया। उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा आदि में तो यही अवस्था है। हाँ, महाराष्ट्र में अभी भी बैलगाड़ियाँ तथा बैलों के हल हैं, किन्तु वे भी अधिक नहीं। इस प्रकार यान्त्रिकीकरण के कारण भी गाय-बैल हमारे दैनिक जीवन से निकल गए। आज किसानों के पास बैल हैं ही नहीं। वे भैंसा बुग्गी तथा ट्रेक्टर रखते हैं तथा यह सही है कि दो बैलों से एक व्यक्ति बड़े परिश्रमपूर्वक दिन भर में जितना कार्य करता था, आज उससे पचास गुना कार्य वह ट्रैक्टर तथा ट्राली से कर रहा है। एक टेक्टर ट्राली 100 क्विंटल तक गन्ने भी आराम से ले जाती है तथा भैंसा-बुग्गी भी 25 किंवटल तक ले जाता है, जबकि बैलगाडी 10-15 क्विंटल ही ले जाती थी। इस सुविधा की दृष्टि से भी किसान आज बैल नहीं रखते। न ही गाय रखते हैं क्योंकि भैंस गाय से अधिक दूध तथा घी देती हैं। भैंस का दूध बिकता भी महँगा है। आज प्रत्येक गाँव में दूध बेचा जाता है जबकि पहले लोग कहते थे कि दूध बेचा तो पूत बेचा। इस प्रकार मान्यता तथा परिस्थिति बदल गई। ऐसी स्थिति में कानून बनाने मात्र से ही काम नहीं चलेगा। गोवंश (गाय-बैल) की हत्या तभी रुकेगी जब भारतीय किसान पहले की तरह ही गाय बैल पालने शुरू करेंगे। किन्तु यह सम्भव कैसे हो, यह विचारणीय है। इसलिए आज गोवंश की रक्षा को आर्थिक तथा राष्ट्रीय पहलू से जनता के सामने रखने की आवश्यकता है तथा गोबर की खाद तथा गैस के अभियान को जन-जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है। साथ ही न्यायालय के आदेश से सर्वसाधारण को अवगत करा के प्रान्तीय सरकारों को इसके पालनार्थ बाध्य करने की आवश्यकता है।

प्रश्न है कि इस व्यापक कार्य को करेगा कौन ? क्योंकि हिन्दू जनता में चेतना ही नहीं है। मुसलमानों को गोवध के अधिकार को तो न्यायालय ने अमान्य ठहरा दिया, किन्तु वेद में तो गोघातक को प्राणदण्ड का विधान सुस्पष्ट है। हमने इसका कितना उपयोग किया है?

निश्चित रूप में यह हिन्दू जनता ऐसा नहीं करेगी, क्योंकि यह चेतनाहीन तथा संवेदनाहीन है। इसके लिए आर्य समाज को ही प्रबुद्ध हिन्दू भाईयों, साधु-सन्तों आदि को साथ लेकर अभियान चलाना होगा। मुसलमान भी इस अभियान में साथ देंगे क्योंकि खाद की समस्या तो उनकी भी है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में *'गोमांस निर्यात रोको संगठन'* में अधिकतर किसान तथा कसाई ही हैं। सहारनपुर में गो मांस के निर्यात का विरोध करने वाले संगठन के संयोजक मोहम्मद इरफान का कहना है कि यदि गाय और भैंस के मांस का निर्यात नहीं रोका गया तो बच्चों को दूध भी नहीं मिलेगा। इसलिए यह अभियान तो गाँव-गाँव में जाना चाहिए। इसमें हिन्दू-मुसलमान सभी सम्मिलित होंगे। जनता का प्रबल दबाव पड़ने पर ही सरकार कुछ करेगी, अन्यथा यही होगा कि उत्तर प्रदेश में एस.पी. की सरकार आते ही मुलायम सिंह ने बन्द पड़े हुए कत्लखानों को फिर से चालू करा दिया।

बी-226 सरस्वती विहार,
दिल्ली-34

अगस्त्य संहिता के चार श्लोक

● कृपाल सिंह वर्मा

$$2H_2O = 2H_2 + O_2$$

जल = हाइड्रोजन + ऑक्सीजन

यदि पानी में विद्युत् प्रवाहित की जाए तो पानी हाइड्रोजन (H2) तथा ऑक्सीजन (O2) में विभक्त हो जाता है। इस तथ्य से भारतवासी हजारों वर्ष पूर्व परिचित थे। "अगस्त्य संहिता" नाम की वैदिक विज्ञान की एक पुस्तक कुछ समय तक विद्यमान थी। संस्कृत भारती नामक दिल्ली के एक प्रकाशन ने The Phsysics नामक पुस्तक प्रकाशित की है। यह पुस्तक Dr. N. G. Dongre नामक वैज्ञानिक ने लिखी है। वैज्ञानिक Dr. N. G. Dongre संस्कृत के विद्वान थे।

इस पुस्तक के पेज नं. 33 पर "अगस्त्य संहिता" के चार श्लोक लिखे हैं। –

"संस्थाप्य मृण्मये पात्रे, ताम्रपत्र सुशोभितम्।
छादयेच्छिखिग्रिवेण चार्द्रभिः
काष्ठपांसुभिः॥१॥"
दस्तालोष्ठोनिधिताव्यः पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्जायते तेजो मैत्रावरुण संज्ञितम्॥२॥
अनेन जल भंगोऽस्ति प्राणोदानेषु वायुषु।
एवं शतानां कुम्भानां संयोगः कार्यकृत् स्मृत ॥३॥
वायुबन्ध वस्त्रेण निबद्धो यानमस्तके।
उदानस्वलघुत्वे विमर्त्याकाशयानकम्॥४॥

पहले दो श्लोकों का अर्थ–

मिट्टी के एक पात्र में ताम्बे की पत्तियाँ लगाई जाएँ। फिर कोयले के पाउडर से तथा लकड़ी के गीले बुरादे से इस पात्र को भर दिया जाए। फिर इसमें जिंक पाउडर भरा जाए और इसे पारे से बन्द कर दिया जाए। इससे पात्र में आन्तरिक क्रिया होती है। तथा मित्र और वरुण नामके तेज उत्पन्न होते हैं।

तीसरे व चौथे श्लोक का अर्थ–

ये मित्र व वरुण नामक तेज जल का विभाजन प्राणवायु तथा उदानवायु में कर देते हैं। इसके लिए इस प्रकार के सौ पात्रों का प्रयोग करना चाहिए। वायु बन्धक वस्त्र में उदानवायु को भरना चाहिए। उदानवायु भरे वस्त्र को किसी यान के मस्तक से बाँन्ध देने से, वह यान को आकाश में ले जाता है।

पहले दो श्लोकों में Voltair Cell का वर्णन है जिसका आविष्कार 1800 में हुआ था। उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि–

(I) हज़ारों वर्ष पूर्व भारतवासी बैटरी बनाकर विद्युत् धारा उत्पन्न करना जानते थे।

(II) विद्युत् धारा का उपयोग कर जल को हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन में तोड़ना जानते थे।

(III) हाइड्रोजन का उपयोग कर यान को आकाश में उड़ाना जानते थे

इस प्रकार भारतीय शिल्प शास्त्र तथा modern technology में अत्यन्त समानता है।

उपरोक्त विवरण से भारतीय शिल्पशास्त्र के कुछ तकनीकी शब्दों का ज्ञान होता है जैसे –

तेज = Electric Charge
मित्र = Positive Charge (+)
वरुण = Negative Charge (-)
प्राण वायु = Oxygen Gas
उदान वायु = Hydrogen Gas
शिखिग्रिवेण = Coal Powder
पारद = Mercury
यानकम् = Flying Machine
जलभंग = Decomposition of Water
शिल्पशास्त्रम् = Technology
आर्द्रकाष्ठपांसु = Moisten Woodsaw Dust
दस्तालोष्ठ = Zink Powder Mond.

253 शिवालोक, कंकरखेड़ा, मेरठ
9927887788

ज्ञान से प्राणियों की रक्षा

● डा. अशोक आर्य

जब हम लोकहित की कामना से कोई कार्य करते हैं तो इसके लिए ज्ञान का होना आवश्यक है। भुवपति शास्त्र तथा भुवनपति शास्त्र, दोनों प्रकार के ज्ञान में, पदार्थ में तथा इस के प्रयोग में हम निपुण होकर जीव मात्र के रक्षक बनें। यजुर्वेद का यह दूसरे अध्याय का दूसरा मंत्र इस पर ही उपदेश करते हुए कह रहा है कि:–

आदित्यै व्युंदनमसि विष्णो स्टुपोऽस्यूर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थां
देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा ॥ यजुर्वेद 2.2॥

हम जानते हैं कि प्रजापति अग्नि को प्रचंड करने के लिए, ज्ञान की अग्नि को प्रचंड करने के लिए हमें ज्ञान श्रवण स्वरूप अर्थात ज्ञान का चम्मच जिसे से ज्ञान रूपी यज्ञ में हम ज्ञानरूपी घी डाल सकें, ऐसा श्रवण बनना होता है। इसके बिना ज्ञान की अग्नि जल नहीं सकती। यह व्यक्ति इस ज्ञान श्रवण के कार्य में क्यों तत्पर हुआ है, क्यों लगा है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिस का उत्तर यह मंत्र देते हुए उपदेश करता है कि:

1. हमारा स्वास्थ्य उत्तम हो:–

उत्तम स्वास्थ्य से ही मानव जीवन के सब कार्य सिद्ध होते हैं। यदि हम स्वस्थ नहीं तो बिस्तर पर पड़े–पडे रोते, कराहते रहते हैं, कुछ कर नहीं सकते। अकर्मण्य से हो जाते हैं, असहाय से हो जाते हैं। इसलिए मंत्र कहता है कि हमें स्वास्थ्य के लिए अदीन देवमाता की स्तुति करना है। भाव यह है कि हे जीव! तेरे अन्दर दूसरों को स्वस्थ रखने वाला ज्ञान हो। दूसरों को स्वस्थ रखने के लिए ज्ञानरूपी एक विशेष प्रकार के जल से तू प्राणी मात्र को भिगोने वाला बन, ज्ञानरूपी जल से प्राणी मात्र को नहला दे, उसे ज्ञान का स्नान कराने वाला है। इस प्रकार तू अन्य लोगों को स्वस्थ, अदीन बनाने के साथ ही साथ दिव्य गुणों से संपन्न करने वाला बन। यह सब करने के लिए ज्ञानरूपी विशेष जल से इन्हें भिगो दे। जब तू ज्ञान का प्रसार करता है तो सब लोगों के जीवन स्वस्थ बनते चले जाते हैं क्योंकि इससे अन्य लोग भी ज्ञान के भंडारी बन जाते हैं तथा इस ज्ञान के प्रयोग से वह भी अपने अंदर के सब कलुष धोने में सफल होते है तथा कलुष धुल जाने से उनके भी रोगाणु नष्ट हो जाते हैं और स्वस्थ रहने के योग्य बन जाते हैं। इससे ही उनमें अदीनता की श्रेष्ठ भावना का उदय होता है तथा उनके जीवन में दैवीय सम्पत्ति का आगमन होता है।

2. लोकहित के कार्य कर:–

हे जीव! तू ही यज्ञ का शिखर है, यज्ञ की छत है। तू ही उन लोगों का मूर्धन्य है, जिनका जीवन यज्ञमय होता है। इसलिए तेरा यह जीवन सदा ही लोकहित के कार्यों के, जन हित के कार्यों के, अन्यों के उत्तम के लिए लगा रहे। इस कारण तू अपने प्रत्येक कार्य में पहले हित अहित का परीक्षण करता है तथा वह कार्य ही करना उत्तम समझता है, जिस में दूसरों का हित हो। परहित का ही सदा ध्यान रखता है। इस प्रकार तू व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठ गया है।

3. दूसरे के सहायक के प्रभु सहायक होते हैं:–

हे जीव! तू निरंतर जन हित का, लोक हित का ध्यान रखने वाला है। तू मूर्धन्य हो कर औरों के जीवनों को ऊपर ले जाने वाला, ऊपर उठाने वाला है। सब की प्रगति की भावना तेरे में है। तू केवल अपनी ही उन्नति नहीं चाहता बल्कि सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति देखता है। तू किसी का भी बुरा नहीं चाहता बल्कि सबका हित चाहता है, सब को आच्छादित करता है। तू मृदु स्वभाव वाला है, सदा मधुर ही मधुर, मीठा ही मीठा बोलने वाला है। इसलिए मैं तुझे अपनी शरण में लेता हूँ, अपनी छत्रछाया में रखता हूँ।

जिस प्रकार हमारे घरों की छत सर्दी, गर्मी तथा वर्षा आदि से हमारी रक्षा करती है, उस प्रकार ही मैं तुझे अपनी छत दे रहा हूँ ताकि तू आसुरी आक्रमणों से, राक्षसी प्रवृत्तियों से बचा रह सके, आसुरी प्रवृत्तियों का तेरे ऊपर हमला न हो सके, इन से तेरी निरंतर रक्षा हो सके। इस प्रकार परम पिता परमात्मा की शरण में आने से हम सुरक्षित हो जाते हैं, जो प्रचार का कार्य हम करते हैं। इस प्रचार के कार्य करते हुए अनेक जन ऐसे होते हैं, जो दूसरों को जो उपदेश देते हैं, उस उपदेश को दूसरों के लिए ही समझते हैं। अपने पर अपने ही अपदेश को लागू नहीं करते। इस प्रकार के उपदेश करने वाले तो अनेक मिल जाते हैं किन्तु अपने पर लागू करने वाले बहुत कम मिलते हैं।

4. लोक हितकारी को प्रभु दिव्य गुण देता है:–

परमपिता परमात्मा कहते हैं कि हे जीव तेरे लिए यह ही आशीर्वाद है कि मैं तुझे दिव्यगुण देता हूँ। इन दिव्यगुणों के लिए मैं तुझे यह उत्तम आश्रय स्थल बनाता हूं। तूने दूसरों को आगे बढ़ाना है। इस कार्य के लिए तेरे पास अनेक प्रकार के दिव्य गुणों का होना आवयश्क है, वह सब दिव्य गुण मैं तुझे देता हूँ।

5. लोक हित के कारण तू स्वाहा का अधिकारी है:–

परमपिता परमात्मा इस मंत्र के माध्यम से हमें उपदेश कर रहें हैं कि हम उपदेश करते समय केवल दूसरों की कमियाँ निकालने में ही न लगे रहें। मीठे शब्दों में प्रचार का कार्य करना चाहिए। जो ज्ञान के प्रसारक इस प्रकार से प्रचार करते हैं, प्रभु उनकी रक्षा करते हैं अपितु उन्हें उत्तम बनाने के लिए अत्यंत मृदुभाषा से, मीठे शब्दों में सब कुछ समझाना चाहिए, सब ज्ञान देना चाहिए।

तेरा यह शास्त्रीय ज्ञान केवल शास्त्रीय ही नहीं है अपितु यह एक क्रियात्मक, एक व्यवहारिक तथा एक प्रयोगात्मक ज्ञान है। तेरे इस ज्ञान की वाणी लोगों को अत्यधिक प्रभावित करने वाली है क्योंकि इस में आगम तथा प्रयोग, दोनों प्रकार के ज्ञानों की निपुणता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। इस कारण ही हे सब प्रकार के ज्ञानों के स्वामी मानव! तेरी यह कल्याणकारी ज्ञान से

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वतंत्रता के लिये समर्पित

श्रीमती उर्मिला शास्त्री

● डॉ. रेखा चौहान

बीसवीं शताब्दी के पहले चार दशक भारत में अत्यन्त उथल-पुथल तथा सुधार वादी व राष्ट्रीय घटनाओं से भरपूर रहे हैं। इस समय दो संस्थाएं विशेष रूप से सामाजिक सुधार तथा राजनीतिक क्षेत्र में व्यस्त थीं। इनमें एक थी 'आर्य समाज' तथा दूसरी 'भारतीय कांग्रेस'। आर्य समाज ने सामाजिक सुधार शिक्षा प्रचार तथा नारी जागरण का कार्य तथा कांग्रेस ने स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग विशेष रूप से अपनाया।

सन् 1920 के बाद कांग्रेस की बागडोर मं0 गाँधी के हाथों में आई तो उन्होंने असहयोग और सत्याग्रह को साधन बनाकर स्वतंत्रता का बिगुल बजाया। आर्य समाज ने इस कार्य में गाँधी जी को पूर्ण सहयोग दिया।

इसी संदर्भ में हमारे सामने श्रीमती उर्मिला शास्त्री का नाम उभरकर आता है। श्रीमती उर्मिला शास्त्री का जन्म 20 अगस्त 1909 में श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ था। इनका परिवार सुशिक्षित संस्कारवान् तथा सम्पन्न था। उर्मिला जी के पिता श्री चरणजीत लाल स्वामी दयानन्द के भक्त तथा आर्य समाज के अनुयायी थे। श्रीमती उर्मिला जी ने घर पर रहकर ही अंग्रेजी तथा संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की। कश्मीरी घराने के ब्राह्मण परिवार में जन्म के कारण स्वभावतः इनका झुकाव संस्कृत की ओर था। पिता के संस्कारों के कारण इन्होंने ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि का अध्ययन तथा मनन किया। उर्मिला जी को कुछ समय कन्या गुरुकुल देहरादून में अध्ययन करने का भी अवसर मिला। वहां इनकी शास्त्रीय योग्यता तथा राष्ट्र प्रेम की भावनाएं और अधिक पुष्ट एवं परिपक्व हुई।

छोटी अवस्था से ही इन्होंने अपना जीवन देश भक्ति तथा समाज सेवा के लिये अर्पित कर दिया। इनकी आयु पूरे बीस वर्ष की भी नहीं थी तभी एक विशाल जन-सभा में मेरठ कॉलिज के तत्कालीन संस्कृत विभाग के अध्यक्ष तथा आर्य समाज के मान्य नेता प्रो. धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री का विधवा-विवाह तथा जन्मजात जाति के विरोध और कर्मगत वर्णव्यवस्था के समर्थन में अत्यन्त प्रभावशाली भाषण उर्मिला जी ने सुना तो, वे न केवल प्रभावित ही हुईं अपितु द्रवित भी हो उठीं। प्रो. धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री गुरुकुल वृंदावन के सर्व प्रथम मेधावी स्नातक बन वहां से तर्क शिरोमणि की उपाधि प्राप्त कर कार्य क्षेत्र में उतर चुके थे। आर्य समाज के तपोनिष्ठ सन्यासी मं. नारायण स्वामी जी की शिष्य परम्परा में वे उक्त गुरुकुल के सर्व प्रथम मेधावी स्नातक थे।

जैसा कि संकेत किया गया है, उर्मिला जी भी उस सभा में उपस्थित थीं। वहीं उर्मिला जी ने कहा कि क्या आप पुर्नर्विवाह तथा जाति पांति के बन्धन को तोड़कर विवाह करने के लिए तैयार हैं? प्रो. धर्मेन्द्र नाथ जी ने बेहिचक तत्काल उत्तर दिया- "निःसन्देह मैं तन मन से इस पक्ष में हूँ"। तभी उर्मिला जी उनके साथ विवाह बंधन में बंध गईं। प्रो. शास्त्री जन्मना जाति से कायस्थ थे तथा श्रीमती उर्मिला जी कश्मीरी ब्राह्मण।

अब उनका कार्य क्षेत्र विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश से लेकर लखनऊ तक था। वैसे दिल्ली तथा लाहौर तक इनके प्रचार की मांग थी। सन् 1930 में स्वतंत्रता आन्दोलन को जीवन्त रूप प्रदान करने के लिए असहयोग तथा सत्याग्रह का मार्ग अपनाते हुए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा शराब घरों पर धरना देकर उन्हें बन्द कराने की भी इन्होंने मुहिम चलाई। विदेशी वस्त्रों की होली जलाना तो उन दिनों एक आम बात हो गई थी। इन कार्यों को करते हुए कई बार प्राणों को संकट में डालना पड़ता था। पुलिस के द्वारा धक्का-मुक्की तथा लाठी चार्ज जैसी घटनाएं तो नित्य की बात थी। इन कार्यक्रमों का नेतृत्व श्रीमती उर्मिला जी बड़ी निर्भयता तथा सुनियोजित ढंग से करती थीं। महिलाओं का एक विशेष संगठन तैयार करके उनके सहयोग से विदेशी वस्त्रों की अनेक दुकाने बंद करवाईं तथा शराबघरों में ताले डलवा दिये।

उर्मिला जी के इन संगठनात्मक तथा सरकार विरोधी कार्यो को देखकर ब्रिटिश सरकार बौखला उठी और हर समय गुप्तचर विभाग उनकी गतिविधियों पर पैनी दृष्टि रखने लगा। ये जहां भी जातीं तो चार सी.आई.डी. के व्यक्ति इनका पीछा करते। प्रत्यक्षदर्शियों का कथन है कि जब उर्मिला शास्त्री मंच से जनता को सम्बोधित करतीं थी तो इनकी मनोहारिणी वाणी से निकले एक-एक शब्द को जनता मंत्रमुग्ध होकर सुनती थी। वे अपना भाषण कुछ इस प्रकार शुरू करती थीं-

"मेरे प्यारे देशवासियो! प्यारी बहिनो और बन्धुओ! आप देख रहे हैं कि हमारी प्यारी मातृ भूमि, प्यारी जन्म भूमि-प्यारी भारत माता, गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई है। माता बिलख रही है। जनता गरीबी और अभावों से त्रस्त है। ब्रिटिश सरकार ने देश को लूटकर दीन-हीन तो बना ही दिया निर्दोषों को भी तरह तरह से सताया जा रहा है। देशभक्त क्रान्तिकारियों को लम्बी-लम्बी सजाएं देकर काले पानी भेजा जा रहा है-फांसी पर लटकाया जा रहा है, उनके नंगे बदन पर कोड़े बरसाये जा रहे हैं। गुलामी के इस वातावरण में सांस लेना भी दूभर हो रहा है। ऐसी स्थिति में एक महान आत्मा ने आकर इस अत्याचारी शासन को ललकारा है। उस महान आत्मा का नाम है- "महात्मा गाँधी"। इस सशक्त आत्मा को केवल गाँधी मत समझना। यह एक तूफानी आँधी है। आप देखेगें कि गाँधी की आँधी में ब्रिटिश हुकूमत राख बनकर उड़ जायेगी। प्यारा भारत देश फिर आजादी की हवा में साँस लेगा। याद रखिए-

"अधीन होकर बुरा है जीना है मरना अच्छा स्वतंत्र होकर"

सुधा को तजकर गरल का प्याला है पीना अच्छा स्वतंत्र होकर"

उनकी ऐसी ओजस्वी वक्तृता को सुनकर जनता का खून खौल उठता था, आकाश "भारत माता की जय"

"महात्मा गाँधी की जय" के नारों से गूंज उठता था।

कुछ ही समय में उर्मिला जी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनता में ऐसी जागृति उत्पन्न कर दी कि सरकार क्रोध से तिलमिला उठी। कई धराएं लगाकर इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तथा छः मास का कठोर कारावास देकर जेल में तरह तरह की यातनाएं दी गई। पर क्या मजाल कि इस देश भक्त आर्य युवती के मुख से उफ तक भी निकली हो।

उर्मिला जी के प्रचार और जनजागरण की सूचना पं. जवाहरलाल नेहरू तथा महात्मा गाँधी के कानों तक भी पहुँची और इन लोगों ने उर्मिला जी के कार्यों की सराहना की। पं. जवाहरलाल नेहरू जी की बहन श्रीमती विजय लक्ष्मी के साथ कंधे से कंधा मिलाकार उर्मिला जी रात दिन स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को प्रज्वलित करती रहीं। इनकी कार्य शैली और लगन को देखकर विजयालक्ष्मी पंडित ने एक बार कहा था कि आज देश को उर्मिला शास्त्री जैसी तेजस्वी मेधावी, राष्ट्र भक्त तथा निडर महिलाओं की आवश्यकता है।

जब उर्मिला जी नारी संगठन कार्यों में व्यस्त थीं तभी मेरठ के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता पं. प्यारे लाल शर्मा को सरकार ने बन्दी बना लिया। तब जन नेतृत्व श्रीमती उर्मिला जी ने संभाला और असहयोग आन्दोलन को आगे बढ़ाया। यह देखकर फिर सरकार के कान खड़े हुए और इन्हें पुनः गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। पाठकगण सोचिए, कि कहाँ तो इनका बचपन सुख-सुविधा तथा बेफिक्री से भरपूर था और कहाँ अब रात दिन की दौड़ धूप, निरन्तर परिश्रम और दिनचर्या में अव्यवस्था तो थी ही, जेल के खान पान और अव्यवस्था के कारण इनका स्वास्थ्य चौपट हो गया। पर इन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जल से छूटने के बाद ये लाहौर चली गईं और वहाँ से एक दैनिक पत्र 'जन्म भूमि' निकालना शुरू किया। इस पत्र में क्रांतिकारी और देश प्रेम से भरे लेख होते थे। इस पत्र को पढ़ने और खरीदने के लिये लोग बेचैन रहते थे। इस कारण सन् 1941 में इन्हें सरकार ने फिर बन्दी बना लिया। इन पर देश द्रोह का केस चलाकर एक वर्ष का कठोर कारावास देकर जेल में बंद कर दिया।

इस सजा को भोगकर ये जेल से बाहर आईं तो 4 जनवरी 1942 को इन्हें सरकार विरोधी कार्यों के कारण पुनः जेल का दण्ड दिया गया। देश द्रोह का इल्जाम लगाकर देश भक्तों को दंडित करना सरकार का नित्य का काम था। शरीर तो जेल यातनाओं से पहले ही क्षीण हो चुका था। इस बार जेल में इनका शरीर भयानक रोग ग्रस्त हो गया। जेल के कष्टों, भूख हड़ताल तथा रेत मिली रोटियां और सड़ीगली दाल के प्रयोग से तन सर्वथा जर्जर हो गया। परीक्षण करने पर पता चला कि अनवरत परिश्रम करने तथा भोजन आदि की उचित व्यवस्था न होने के कारण इनके गर्भाशय में कैंसर हो गया। उस समय न तो कैंसर जैसे भयानक रोग का कोई उचित उपचार था, और न कोई संतोषजनक समाधान।

अन्त में 6 जुलाई 1942 में जब देश की आजादी की अन्तिम लड़ाई शुरू होने में केवल 33 दिन बाकी थे, भारत की इस होनहार सुपुत्री ने केवल 33 वर्ष की अल्पायु में, इस तेजस्विनी आर्य तरुणी ने भारत माता के चरणों में अपनी अंतिम श्वास समर्पित कर स्वर्ग की राह पकड़ी।

चाँदी की चम्मच मुँह में लेकर जन्मी भारत माँ की इस बहादुर बेटी ने अनेक असहनीय शारीरिक एवं मानसिक वेदनाएं सहन करते हुए भी न तो कभी जेल मुक्ति की प्रार्थना की, न कभी ब्रिटिश सरकार के जघन्य अत्याचारों के सामने अपना मस्तक झुकाया। तिरंगे की शान के लिए

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

www.thearyasamaj.org

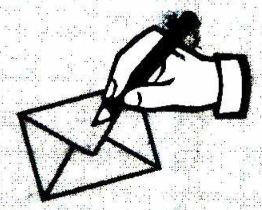

पत्र/कविता

शव को दुर्गति से बचाओ

प्रिय मित्रो! जब किसी विभाग कार्यालय संस्थान का कोई व्यक्ति कर्मचारी लम्बी सेवा अवधि के बाद सेवानिवृत होकर अपने घर जाता है तब उसके सम्मान में अन्य सहकर्मी उसे जलपान के साथ विदाई उपहार देते हैं। ऐसी वस्तु उसे भेंट करते हैं जो उसके आगामी जीवन में काम आती रहे। कोई ऐसी वस्तु नहीं देते जो उसके काम ना आये।

अब आप थोड़ा विचार करें। यदि हमारा आपका कोई रिश्तेदार या इष्ट मित्र अपनी जीवनयात्रा पूरी करके अपने भौतिक शरीर को छोड़ देता है तब आप उसे अन्तिम विदाई उपहार क्या देते हो? हम देखते हैं उसके मृतक शरीर पर कीमती चादर डालते हैं। क्या आपकी यह चादर उसके कुछ काम आयेगी। ये सब चादरें अन्त्येष्टि स्थल पर उतारली जाती हैं जो ड्राईक्लीन होकर फिर मार्किट में आजाती हैं। आप ऐसा उपहार क्यों नहीं देते जो उसकी सद्गति में काम आये। आप कहोगे वो क्या है? भाई साहब आप अपने सामर्थ्य के अनुसार घी का पैकेट दे सकते हो। महंगा होने के कारण घी नहीं दे सकते तब दो तीन गोले ले जाओ। तोड़कर उसकी चिता पर चढ़ा दो। ये भी नहीं तो सामग्री का पैकेट ही दे दो। काफूर भी बड़े काम की चीज है। इनमें से कोई भी वस्तु आप अन्तिम विदाई उपहार के रूप में दे सकते हो जो दाहकर्म में उपयोगी है।

पुनः कहना चाहता हूं जितने रुपयों में चादर आयेगी उतने में आधा किलो घी का पैकेट भी आ जायेगा। आप चादर की बजाय उसे काम की चीज भेंट करो। जहाँ तक हो सके अपनी श्रद्धा से कुछ लेकर जाओ। शव को दुर्गति से बचाओ।

देवराज आर्य मित्र
नई दिल्ली– 110064

****

दयानन्द 'ऐंग्लोवैदिक' आन्दोलन की महिमा

उजाला विद्या–ज्योति का किया ऋषिवर ने भारत में।
बहाया ज्ञान की गंगा को फिर मुनिवर ने भारत में।।

ऋषि–निर्वाण के पश्चात् हमारे कर्णधारों ने।
स्मारक चाहिए ऋषिवर का, सोचा उन सितारों ने।।

हमें ईसाईयत के खूनी चँगुल से छुड़ाने को।
चला डी.ए.वी.आन्दोलन हमें ऊँचा उठाने को।।

प्रतिज्ञा की भयंकर हंसराज जैसे मनस्वी ने।
दिया जीवन का दान और की तपस्या उस तपस्वी ने ।।

मुल्क–कर्तार का भी योग था इसको बनाने में।
दिया सहयोग ठाकुर ने पतिव्रत को निभाने में।।

मुलक लाजपत के श्रम ने भी इसको बनाया था।
मेहर चन्द शर्मा के तप ने इसे ऊँचा उठाया था।।

विकासार्थ इसके आजीवन सदस्यों को बनाया था।
इन्हीं छब्बीस ने दे रक्त इसे सींचा–सजाया था।।

साईं, लाल और टेकचन्द्र का इसको सहारा था।
महाजन मेहरचन्द ने इसे साजा सँवारा था।

मेहरचन्द अग्रवाल और मान्य ज्ञानचन्द्र महाजन ने।
सजाया वैदिक आँग्लबाग देवीचन्द्र जैसे सुजन ने।।

कभी थे डी.ए.वी. के अग्रगन्ता दास नारायण।
कुशल अध्यक्षों के निर्देश में पनपेगा आन्दोलन।।

ज्ञान और विद्या का सन्देश हम घर–घर सुनाएँगे।
'विचार' इस दिव्य आन्दोलन की शोभा को बढ़ाएँगे।।

रचयिता
प्रो. रामविचार एम.ए.

आर्य प्रेमियों से आग्रह है कि शिथिलता शब्द की अवहेलना करें

विगत कितने वर्षों से प्रत्येक 15 अगस्त पर लाल किले की प्राचीर से देहली की ऐतिहासिक भवनों का उल्लेख होता था जिसमें लालकिले के सामने जैन पक्षी अस्पताल, गौरीशंकर मन्दिर, गुरुद्वारा, चर्च, फतेहपरी मस्जिद के साथ–साथ आर्य समाज के दीवान–हाल को भी इस उल्लेख में शामिल किया जाता था। मैं किशोर अवस्था से प्रायः यह वर्णन सुनता रहा हूँ।

परन्तु खेद अब दीवान हाल का उल्लेख आकाश वाणी और दूर दर्शन के प्रसारण में नही किया जाता?

आर्य समाज का यह प्रमुख ऐतिहासिक दीवान हाल भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितने अन्य भव्य स्मारक? क्यों हुई इसकी उपेक्षा क्या इस उपेक्षा के लिये आकाशवाणी के व्यवस्थापक दोषी हैं या स्वयं आर्य समाज?

यह तो सर्वविदित है कि आर्य–समाज दिवान हाल की गतिविधिया शियिल हो गई है। अब यदा कदा ही चर्चा में रहती हैं। ऐसा क्यों?

हमारा देश के समस्त आर्य प्रेमियों से आग्रह है कि शिथिलता शब्द की अवेहलना करें और चेतना के स्वर जागरूक हों। वरना लुप्त हो जायेंगे।

कृष्णा मोहन गोयल
अमरोह 244221

****

बिना संस्कृत पढ़े कोई पूर्ण भारतीय नहीं बन सकता

संस्कृत भाषा भारत वर्ष के लाखों वर्ष पुराने बहुमुखी इतिहास की संवाहक है। सारा यूरोप, जर्मनी, इंग्लैण्ड फ्रान्स सभी देशों के भाषाशास्त्री संस्कृत की महिमा पर मुग्ध है। प्रसिद्ध विद्वान सर विलियम जांन ने कहा था–संस्कृत भाषा की पद रचना बत्यधिक अदभुत है, यह भाषा ग्रीक से भी पूर्ण लैटिन से अधिक समृद्ध तथा दोनों से अधिक परिष्कृत है। सारा संसार स्वीकार करता है कि हजारों वर्ष पूर्व का विज्ञान, गणित,भूगोल, खगोल, नक्षत्र विद्या आदि संस्कृत भाषा में निहित है। स्वतंत्र भारत में बड़ी निर्दयता से संस्कृत की उपेक्षा हुई है। विदेशी राज्य के समय माध्यमिक कक्षाओं के लगभग 80 प्रतिशत विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते थे और रामायण, गीता, महाभारत आदि उत्कृष्ट ऐतिहासिक धरोहर से उनका परिचय हो जाता था। संस्कृत हमारी उत्कृष्टतम विरासत है। पंडित जवाहरलाल नेहरू लिखते हैं– यदि कोई मुझ से पूछे कि भारत के पास सबसे बड़ा खजाना और सर्वोतम धरोहर क्या है तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के कहूंगा कि संस्कृत भाषा और साहित्य तथा वह सब कुछ जो इसमें समाहित है। यह एक शानदार विरासत है और जब तक हमारे जीवन पर इसका प्रभाव कायम है तब तक भारत की ये श्रेष्ठता कायम रहेगी।' महात्मा गांधी ने भी कहा–संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरंतन ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढ़े कोई पूर्ण भारतीय नहीं बन सकता।

मोहन लाल मगो
F.65, पाण्डव नगर
दिल्ली –110091

****

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बल्लभगढ़ में भविष्य को समर्पित एक दिन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बल्लभगढ़ में 'फैंटास्टिक फ्यूचर फैंटेसी वर्ल्ड' नामक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य रचनात्मक व कल्पनाशील छात्रों को एक मौलिक मंच प्रदान करना था।

प्रतियोगिता में फरीदाबाद व बल्लभगढ़ के विभिन्न स्कूलों की टीमों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण *'भविष्य के स्वप्न लोक की ओर उड़ान'* था जिसमें डी.ए.वी. सैक्टर 14 ने प्रथम पुरस्कार व डी.ए.वी. सैक्टर 49 ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। फैशन शो के नन्हें माडल मन मोह लिया। 'विज्ञापनों की भावी दुनिया ऐड मैड शो' में सर्वोतम प्रस्तुति मॉर्डन डी.पी.एस सैक्टर 87 फरीदाबाद के छात्रों ने दी।

कार्यक्रम का समापन करते हुए डी.ए वी. पब्लिक स्कूल बल्लभगढ के प्रधानाचार्य श्री वी के चोपड़ा ने प्रतिभागी विद्यालयों के छात्रों के रचनात्मक प्रयासों व मौलिक चिंतन की सराहना करते हुए उन्हें आकर्षक पुरस्कार व सर्टिफिकेट प्रदान किए।

☞ *पृष्ठ 6 का शेष*

दयानन्द पीठ द्वारा...

पंजाबी आदि छात्र की जो भी अनुकूलता हो उसके अनुसार असमी, कश्मीरी मराठी तमिल आदि। या भारत के पड़ौसी देशों की भाषा, अथवा संयुक्त राष्ट्र संघ वाली 6 भाषा में जो हो।

'आजीवन सुप्रभाव' से संबंधित 'संस्कार विधि' वेदांग कल्प में गृह्य सूत्र है। इसे 'दयानन्द गृह्य सूत्र कह सकते है। मनोनुकूल सदगुणी शुभकर्मी शीलवान संतान के लिए गर्भाधान 1, पुंसवन 2, सीमंतोन्यन 3, है। प्रसव हो जाय निरापद इसके लिए जातकर्म 4 है। संतान के सम्बोधन के सुविधा हेतु नामकरण 5, है। कक्ष से बाहर के वायुमंडल से रोग न हो इसके लिए निष्क्रमण 6 है। अन्न शुद्ध सात्विक देने से शिशु पर संकट न हो इसके लिए अन्न प्राशन 7, है। सिर को रखना नीरोग इसके लिए चूड़ाकर्म 8 है। समुचित श्रवण–ठीक से सुनने की स्थिति हमेशा बनी रहे इसके लिए कर्णवेध 9 है। संभावित वर्ण निर्धारण वास्ते उभनयन 10 है। ताकि अगले वर्षो में संतान समाज हितैषी पर्यावरण सुखाभिलाषी बनी रहे। ...... माता पिता आदि से निरूपचारिक शिक्षा मिलती। समाज में यशस्वी बनने मानवजाति का हित करने, व्यक्तित्व विकसित करने कराने के लिए गुरुकुल में वेद (तथा व्याख्यान उपनिषद आदि) व शास्त्र सीखने हेतु वेदारंभ 11 है। शिक्षा पूरी हुई स्वावलम्बन के लिए व्यवसाय करना विवाह करना है, अतः गुरुकुल से आगे बढ़ने को समावर्तन 12 है। स्वेच्छित चयन किया जीवनसाथी का दाम्पत्य स्वीकार समाज में प्रकट करने वास्ते विवाह 13 है। सुसंतान निर्माण किया उसका विवाह हुआ, संतान के संतान (पोती पोता) हुई तो गृहाश्रम से आगे बढ़े परा वैवाहिक जीवन के लिए वानप्रस्थ 14 है। सारी अभिलाषा आकांक्षा कामना लालसा लोक प्रियता धन संसाधन संतान आदि की न रहे इसके लिए सन्यास 15 है। अंतिम श्वास निकल गया, शव रह गया इससे प्रदूषण न हो, अतः अन्त्येष्टि है, जिसे अगली पीढ़ी वाले करते हैं''। 'आजीवन सुप्रभाव' दंपति परिवार कुटुंब में जीवंत हो, इसके लिए ''ग्रह्य (कल्प) शास्त्र'' में कुशल पुरोहित तैयार करने होंगे।

''श्रौत कल्प शास्त्र'' पर्यावरण शोधन से संबंधित है। इसमें ''वर्षा इष्टि'' भी होती है। ऋग्वेदीय आश्वलायन श्रौत शास्त्र में वर्षाकाम इष्टि'' नाम है। यजुर्वेदीय कात्यायन श्रौत शास्त्र में ''कारीरि इष्टि नाम है। इच्छित वर्षा के प्रयोग कराये जा सकते हैं। ऋषि दयानन्द कृत पंच महायज्ञ विधि में कहा है। गोधृत सिद्ध करने के लिये 10 किलो में 100 ग्राम कपूर, 10 ग्राम केसर, कस्तूरी 1 ग्राम डालने से सिद्ध किया जाय। स्मरण रखें वर्षा याग में समिधा कैर (कारीरि) की ही काम में आती है जो अपने आप सूखी हो।............

श्रौतकल्प में दसियों सोम याग हैं। इन्हें करके देखा जाय ताकि पता चले कि तापमान कितना कम हुआ वातावरण का किसी सोमयाग से। किसी ग्राम नगर आदि में कितने बार कितने घंटे के सोमयाग से तापमान कितना नीचे आया यह ''वैज्ञानिक रीति'' से पता किया जाये। प्रदूषण रहित, विष रहित करना है वायुमंडल, जल स्रोत व पृथ्वी (उपजाऊ मिट्टी) को तो श्रौतयाग के प्रयोग करने होंगे।

698, गोलाई, थाँवला, पिनकोड–305026,
जि.– नागौर

☞ *पृष्ठ 8 का शेष*

ज्ञान से प्राणियों ....

भरपूर वाणी अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। इससे दूसरों को अत्यधिक लाभ हो रहा है। इसलिए तू स्वाहा शब्द का अधिकारी हो गया है। अतः मैं तुझे सब प्राणियों कि रक्षा करने वाले को स्वाहा जैसे शुभ शब्दों का उच्चारण करने का अधिकारी बनाता हूँ। इस शुभ शब्द से तू सब का उपकार करने में सफल होगा।

हे लोक हितकारी मानव! तू सदा दूसरों के कल्याण की, हित की, शुभ की ही बातें सोचता है, इन सब का हित ही चाहता है। इसलिए तेरे पास कुछ दिव्य शक्तियों का होना आवश्यक होता है। तू दूसरों के हित के लिए अपने हित की भी चिन्ता नहीं करता। इसलिए तुझ चिन्तनशील को जो स्वाहा जैसे उत्तम शब्द का चिन्तन मनन किया जाता है, उच्चारण किया जाता है, यह सब लोक पदार्थों के प्रतिभूत होते हैं। इसलिए यह स्वाहा शब्द तेरे लिए प्रशंसात्मक शब्द है। इन का उच्चारण तेरे लिए ही किया जाता है। तूने अत्यधिक चिन्तन किया है, तूने अत्यधिक मनन किया है। इस प्रकार तू शास्त्रीय ज्ञान का पति अर्थात् स्वामी बन गया है। इसके साथ ही साथ इस शास्त्रीय ज्ञान के विषयभूत पदार्थों का भी तू पति है, स्वामी है, मालिक है।

104 शिप्रा अपार्टमेन्ट कौशाम्बी
201010 गाजियाबाद
चलभाष 0120 2773400, 09718528068

☞ *पृष्ठ 9 का शेष*

स्वतंत्रता के लिये समर्पित....

इन्होंने तन, मन, धन, सुख, चैन सब कुछ लुटा दिया।

इस सन्दर्भ में यह जानना उपयोगी होगा कि श्रीमती उर्मिला शास्त्री के पति प्रो. धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता थे। उनकी लगभग 36 वर्ष मेरठ कॉलेज सें संस्कृत विभाग की अध्यक्षता में सैकड़ों छात्रों ने उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर देश विदेश के विभिन्न भागों में शिक्षा का दीप प्रज्वलित किया।

मेरठ कॉलेज की उत्तर दिशा में मुख्य द्वार के ठीक सामने उर्मिला शास्त्री ने कई हजार वर्ग फीट में एक दर्शनीय कोठी का निर्माण कराया था, जिसमें उन्होंने आराम से जीवन व्यतीत करने का स्वर्णिम स्वप्न संजोया था, किन्तु स्वतंत्रता देवी की अराधना में रत हस्तियों के भाग्य में आराम कहाँ? इसी कोठी से लगा हुआ, बेगमपुर से लेकर मेरठ कमिशनरी के चौराहे तक का लघु–राजमार्ग– ''उर्मिला शास्त्री–पथ'' इनकी पवित्र स्मृति को अपने भीतर आज भी संजोये हुए हैं।

श्रीमती उर्मिला शास्त्री को राष्ट्र का शत् शत् नमन।

अंतिम घड़ी की भावना:– मृत्यु शैया से

''कारागृह मेरा मंदिर था, आजादी देवी की पूजा।

''भारत की जय'' वेद मंत्र था, सप्त स्वरों में यह स्वर गूँजा।।

बेड़ी थी पैरों की झाँवर, हथकड़ियाँ हाथों के कंगन।

तन पर मेरे पड़ी लाठियाँ, रक्त बना माथे का चंदन।।

द्वारा–मानव संकल्प सोसायटी

पानीपत–132 103
*******मो. 09034507448**

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 15-16 /01/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

डी.ए.वी. जयपुर में हुआ श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का भव्य आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल वैशाली नगर, जयपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह कार्यक्रम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा व आर्य युवा समाज, राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम की पूर्व संध्या अन्तर्राष्ट्रीयख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. वागीश कुमार आचार्य जी द्वारा ''आओ, श्रद्धा के साथ आनन्द की ओर चले! विषय पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

विद्यालय का सभागार जिज्ञासु व सुधी श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था, जयपुर के आर्य सभासद, अभिभावकजनों के साथ-साथ लोकायुक्त राजस्थान सरकार, श्री एस. एस. कोठारी एवं पूर्व मुख्य सचिव राजस्थान सरकार सहित अनेक आई.ए.एस., आई.पी.एस. व आर.ए.एस. अधिकारियों की उपस्थिति थी।

कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय प्रधान सर्वश्री पूनम जी ने वैदिक मन्त्रोच्चारण के मध्य दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। मंगलाचरण के रूप में स्थानीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने प्रभु-भक्ति के गीत ''ओ३म् बोल मेरी रसना घड़ी-घड़ी'' पर नृत्य प्रस्तुत किया, जिसने उपस्थित जनसमूह को भाव-विभोर कर दिया।

डी.ए.वी सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, जयपुर के उन सभी मेधावी छात्र-छात्राओं को माननीय मुख्य अतिथि सर्वश्री पूनम सूरी जी के कर-कमलों द्वारा सम्मानित किया गया, जिन्होंने विगत सत्र में शैक्षणिक गतिविधियों में उल्लेखनीय प्रदर्शन द्वारा विद्यालय का गौरव वर्धन किया। पूरे कार्यक्रम के दौरान राजस्थान की विभिन्न डी.ए.वी. संस्थाओं से पधारे संगीत शिक्षकों ने अपने ईश-भक्ति आधारित भजनों के माध्यम से सम्पूर्ण वातावरण को सुरम्य व भक्तिमय बनाए रखा।

22 दिसम्बर, रविवार को कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः सर्वेष्टि महायज्ञ के साथ हुआ, जिसमें श्रद्धेय श्री पूनम सूरी जी ने सपत्नीक मुख्य यजमान के रूप में आहुतियां प्रदान की तथा डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली से समागत अतिथिगण एवं क्षेत्रीय निदेशकगण, प्राचार्यवृन्द, शिक्षकगण, अभिभावकजन व भारी संख्या में आर्य जन सम्मिलित हुए। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. प्रमोद कुमार योगार्थी जी थे। शान्तिपाठ के उपरान्त यज्ञप्रेमी श्रद्धालुओं ने प्रसाद के रूप में यज्ञशेष ग्रहण किया।

सर्वेष्टि महायज्ञ के पश्चात् उपस्थित सभी जन मुख्य पाण्डाल में एकत्रित हुए। इस विशाल पाण्डाल में लगभग 2500 से भी अधिक श्रोतागत उपस्थित थे। डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल वैशाली नगर, जयपुर के छात्रों द्वारा वैदिक मन्त्राधारित नृत्य प्रस्तुत कर प्रभु का वन्दन किया।

कार्यक्रम में अत्यन्त भावुकता का क्षण तब रहा, जब मुख्य अतिथि श्रीमान् पूनम सूरी जी ने कार्यक्रम की भव्यता से अभिभूत हो सम्मान का प्रतीक अपनी शॉल विद्यालय के प्राचार्य, श्री अशोक कुमार जी शर्मा को भेंट कर सम्मानित किया। इसके साथ ही ने डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर के प्रथम प्रविष्ट छात्र श्री भूदेव देवड़ा, प्रबन्ध निदेशक, रावत ग्रुप ऑफ होटल्स का अभिनन्दन किया। इस अवसर के लिए विशेष रूप से प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी मंचासीन अतिथिगण द्वारा किया गया।

श्री पूनम सूरी जी ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम के भव्य संयोजन की प्रशंसा की और कहा कि जीवन में पांच 'प्र' 1. प्रार्थना 2. प्रतिज्ञा 3. पुरूषार्थ 4. प्रतीक्षा 5. प्राप्ति का बहुत महत्व पूर्ण है, इनसे हम लक्ष्य प्राप्ति के शिखर तक पहुँच सकते हैं

तदुपरान्त सेवा प्रकल्प के अन्तर्गत समाज के उपेक्षित,, निःशक्त व असमर्थ जनों को माननीय प्रधान जी व श्रीमती मणि सूरी जी ने दैनिक उपयोग की वस्तुएं प्रदान की, जिनमें सिलाई मशीन, रजाई, कम्बल व शॉल सम्मिलित थे।

स्थानीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने 'श्रद्धानन्द-जीवन झांकी'- एक लघु नाटिका का मंचन किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी दर्शकवृन्द ने नाटिका के सजीव मंचन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती के काकरिया, निदेशिका, पब्लिक स्कूल्स, डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं अन्य सभी सम्मानीय अतिथिजनों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में उपस्थित विशाल जन समूह ने समस्त आयोजन की मुक्त कण्ठ से भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शान्तिपाठ के साथ भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ तथा सभी आगन्तुक अतिथियों ने मिलकर ऋषिलंगर में सर्वेष्टि महायज्ञ के प्रसाद को ग्रहण किया।

डी.ए.वी. थर्मल कॉलोनी पानीपत ने मनाया श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल थर्मल कॉलोनी पानीपत में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में हरियाणा संस्कृत अकादमी एवं आर्य युवा समाज हरियाणा ने मिलकर एक दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें न केवल हरियाणा अपितु दिल्ली के भी संस्कृत शिक्षा प्रेमियों एवं अध्यापकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। दिल्ली से प्रमुख रूप से पधारे हुए दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी का संस्कृत के उत्थान में योगदान के बारे में बताते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके हिन्दुस्तान की संस्कृति को पुनर्जीवित किया। जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी से पधारे प्रोफेसर सुधीर कुमार ने अपने सस्मर्णो के द्वारा बताया कि किस प्रकार संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। दिल्ली हिन्दी अकादमी के पूर्व सचिव और विद्यालय के प्रबन्धक श्री नानक चन्द जी ने संस्कृत के योगदान में डी.ए.वी. संस्थाओं की सराहना की। विद्यालय के निदेशक एवं आर्य युवा समाज हरियाणा के प्रधान डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी जी ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति और संस्कृत का मान-सम्मान करना चाहिए। यह हमारी राष्ट्रीय धरोहर है। इसका संरक्षण हम सबका कर्त्तव्य है। यह भाषा नैतिकता और संस्कारों से परिपूर्ण है, जिसके लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सब कुछ न्यौछावर कर गुरूकुल की परम्परा को आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा कि आर्य युवा समाज हरियाणा संस्कृत के विकास के लिए आन्दोलन चला रहा है। जिसकी अगली कडी में राज्य स्तर पर सांस्कृतिक सम्मेलन किया जाएगा। मुख्यातिथि डॉ. के.सी. यादव ने कहा कि संस्कृत भाषा का एक-एक श्लोक अनेक समस्याओं के समाधान में सक्षम है। संस्कृत मानव सभ्यता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस मौके पर श्री हरिश पांचाल प्रि. जीन्द, श्री धवन प्रि. सफीदों, श्रीमती रश्मि विद्यार्थी प्रि. डी.ए.वी. स्कूल थर्मल, श्री अरूण कोशिक प्रि. जाखल आदि उपस्थित रहे।

मुद्रक व प्रकाशक – श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी